चन्दामामा
जुलाई १९८५

विषय-सूची

जुलाई-१९८५

*

चन्दामामा

संस्थापकः 'चक्रपाणी' संचालकः नागिरेड्डी

किसी राज्य का राजा या शासक जब कोई अनुचित कार्य करता है तो वह सारी प्रजा के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। ऐसे व्यक्ति को सही रास्ते पर लाने के लिए बुद्धिमत्ता के साथ साहस की भी आवश्यकता होती है। इसका सुन्दर उदाहरण "कुन्दन की कुशलता" कहानी में मिलता है।

अमर वाणी

नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
विवेको दुर्लभस्तत्र, दातृत्वं च विशेषतः ॥

[ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य-जन्म प्राप्त करना कठिन है, पर विद्या की प्राप्ति तो इससे भी कठिन है। इस जगत में विवेक दुर्लभ है, लेकिन दानशीलता तो विशेष रूप से दुर्लभ है।]

वर्षः ३७ जुलाई १९८५ अंकः १२

एक प्रतिः २-०० :: वार्षिक चन्दा:: २४-००

'चन्दामामा' के संवाद

क्या चाँद पर मोमबत्ती को देखा जा सकता है ?

पृथ्वी से चाँद की जितनी दूरी है, क्या उतनी दूरी से मोमबत्ती के प्रकाश को देखना संभव है ? खगोल शास्त्रियों का कहना है कि १९९३ तक यह संभव हो जायेगा। केलिफोर्निया के खगोलशास्त्री इस कार्य के लिए फालोमार-पहाड़ों पर विशेष रूप से एक दूरबीन का निर्माण कर रहे हैं। इस दूरबीन के द्वारा बारह लाख करोड़ प्रकाश-वर्षों से पहले की वस्तुओं को भी पृथ्वी से देखा जा सकेगा।

तिमिंगलों का संगीत-प्रेम

अलास्का तथा सोवियत रूस के मध्यवर्ती समुद्री प्रदेश में एक स्थान पर पानी के जम जाने के कारण लगभग एक हज़ार तिमिंगल फँस गये। सोवियत नौकादल ने उन्हें निकालने के लिए एक नहर का निर्माण किया, लेकिन भड़के और घबराये हुए तिमिंगल वहाँ से बाहर नहीं निकल सके। और भी कई तरह के प्रयत्नों के बाद जब उन्हें संगीत सुनाया गया तो सारे तिमिंगल नहर के रास्ते से बाहर आगये और समुद्र-जल में प्रवेश कर गये।

ग्रहान्तर-वासियों का स्वागत

दूसरे ग्रहों से कोई आयेगा तो पृथ्वी पर कहाँ उतरेगा ? इस सवाल के जवाब में अन्तानियो वाजक्वेज आलवा नाम के एक बुजुर्ग का कहना है कि दूसरे ग्रहों के वासी मैक्सिकन नगर से अस्सी मील दूर स्थिति ओरियंटल पर्वत-मालाओं पर उतर सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन अतिथियों के स्वागत के लिए एक हवाई अड्डे का निर्माण किया जा रहा है।

क्या आप जानते हैं ?

१. भूगोल का कितना हिस्सा जलमय है ?
२. सूर्य का समीपवर्ती ग्रह कौन सा है ?
३. ग्रहों में से शीतल ग्रह कौन सा है ?
४. ग्रहों में सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है ?
५. भूगोल का व्यासार्थ कितना है ?

उत्तर पृष्ठ ६४ पर देखें

कुन्दन की कुशलता

विजया नगरी के राजा का नाम चंद्रसेन था।

एक दिन की बात है, राजा चंद्रसेन अपने पुत्र की शिक्षा को लेकर महारानी से चर्चा कर रहे थे। तभी एक कौआ महल की खिड़की से कक्ष के अन्दर आ गया। दासी ने देखा तो ताली बजाकर उसे भगा दिया। लेकिन राजा चंद्रसेन के मन में उस कौए को देखकर एक विचार आया।

उस विचार को तुरन्त कार्यान्वित करने के लिए राजा ने मंत्री को बुला भेजा और कहा, "मंत्रिवर ! आप तत्काल सारे राज्य में इस आशय का ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि हमारे राज्य में जितने कौवे हैं, उनकी सही संख्या बताने वाले को हम बढ़िया पुरस्कार देंगे। पर जो सही संख्या बताने के विश्वास से आयेगा, लेकिन बता नहीं पायेगा तो उसे बीस कोड़े लगाये जायेंगे।"

मंत्री ने राजा के आदेश का पालन किया। एक सप्ताह बीत गया, लेकिन राजा की इस सनक का समाधान करने के लिए कोई आगे नहीं आया।

यह आठवें दिन की बात है जब कुन्दन नाम के एक युवक ने इस विचित्र ढिंढोरे की बात सुनी। वह अपनी शिक्षा समाप्त कर नौकरी की खोज में राजधानी आया था। सारी बात सुनकर कुन्दन को आश्चर्य तो हुआ ही, पर राजा चंद्रसेन के शासन के प्रति उसके मन में गहरी शंका भी हुई।

वह सीधा राजसभा में आया और राजा को प्रणाम करके बोला, "महाराज ! मैं शिक्षित लेकिन बेरोज़गार व्यक्ति हूँ। नौकरी की खोज में मैंने नगरों, ग्रामों एवं छोटी-छोटी बस्तियों का भ्रमण भी किया है। मैं अपने राज्य के कौओं के बारे में ही नहीं, बल्कि बगुले, बाज, तोते, गीध, कठफोड़वों के बारे में भी पूरी जानकारी रखता हूँ और उनकी सही संख्या बता सकता हूँ। हाँ,

ऊर्मिला गुप्त

"जी हाँ, महाराज ! आपकी शर्त मुझे मालूम है। हमारी विजया नगरी में इस वक्त तीन लाख बीस हज़ार कौए हैं। मैं ने अच्छी तरह से गिन कर हिसाब लगाया है। मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी गिनती में कोई भूल-चूक न होगी। अगर आप इसमें कोई गलती पायेंगे तो अपनी शर्त के अनुसार आप मुझे दण्ड दे सकते हैं। उसे मैं खुशी से भोगने के लिए तैयार हूँ।" कुन्दन ने कहा।

"अच्छा ऐसी बात है ! तुम्हारी बतायी हुई संख्या सही है या गलत, इस बात का पता लगाने के लिए मैं अमुक-अमुक नगरों और गाँवों के मुखियों के पास समाचार भेजता हूँ। वे अपने-अपने प्रदेशों के कौओं की गणना करवाकरर मुझे सूचित करेंगे।" राजा बोले।

"महाराज ! अभी मैंने निवेदन किया था कि इस वक्त हमारे राज्य के कौओं की संख्या तीन लाख बीस हज़ार है। पर आपके अधिकारियों के द्वारा उनकी गिनती कराते समय संख्या में थोड़ा परिवर्तन आने की संभावना है। कौओं में स्वेच्छारिता होती है। उनके अन्दर देश-प्रेम की भावना तो मिलती ही नहीं, और न तो वे देश की सीमा का आदर ही करते हैं। इसलिए अगर पड़ोसी राज्यों से कुछ कौए हमारे राज्य में आगये तो हमारे यहां के कौओं की संख्या बढ़ जायेगी। और अगर हमारे राज्य के कौए पड़ोसी राज्यों में चले गये तो हमारे यहाँ उनकी संख्या घट जायेगी। ऐसी स्थिति में उनकी संख्या में जो

उल्लुओं की संख्या मैं नहीं बता सकता, क्योंकि वे निशाजीवी हैं।"

कुन्दन की बात सुनकर राजा मुस्कराने लगे और बोले, "कुन्दन ! अगर तुम्हारी गणना सही है तो पक्षियों के प्रति तुम्हारी अभिरुचि प्रशंसनीय है। लेकिन, किसी ख़ास कारण से मैं केवल अपने राज्य के कौओं की संख्या ही जानना चाहता हूँ।"

"मैं उनकी सही संख्या बता सकता हूँ, महाराज !" कुन्दन ने बड़ी तत्परता से जवाब दिया।

"याद रखो, अगर सही संख्या नहीं बता सके तो बीस कोड़े खाने पड़ेंगे।" राजा ने चेतावनी दी।

हेर-फेर होगा, उसका जिम्मेवार मैं नहीं हूँ ।" कुन्दन ने सारी स्थिति स्पष्ट कर दी ।

कुन्दन की कुशलता पर सारे सभासदों ने हर्ष प्रकट किया। वे समझ गये कि राजा के इस व्यर्थ प्रयास पर कुन्दन परोक्ष रूप से आक्षेप कर रहा है। राजा भी कुन्दन के उत्तर से सन्तुष्ट हुए बिना न रह सके और बोले, "बताओ, तुम्हें क्या पुरस्कार दिया जाये ?"

कुन्दन क्षण भर रुक कर बोला, "महाराज, मुझे क्षमा कर दीजिए। राजा को सदा प्रजा के कल्याण की बात सोचते हुए उपयोगी कार्यों में अपना समय लगाना चाहिए। अपने अमूल्य समय को निरर्थक प्रश्नों के समाधान पाने में नहीं गँवाना चाहिए। हमारे राज्य की प्रजा कुछ प्रदेशों में पानी की तंगी से परेशान है। जनता में त्राहि-त्राहि मची हुई है। कुछ और इलाकों में भयंकर बाढ़ आयी हुई है। आप कुछ अनुभवी विशेषज्ञ लोगों से सलाह-मशविरा करके पहले इनका हल निकालिये। जिस से मेरे जैसे अनेक युवकों को काम मिल जाएगा ऐसी हालत में मैं बेरोज़गार नहीं रहूँगा। यही मेरा सही पुरस्कार है।"

कुन्दन की बातें सुनकर राजा बहुत खुश हुए, बोले, "कुन्दन ! मैं तुम्हें अपने मुख्य सलाहकार के रूप में नियुक्त करता हूँ। तुमने सारे राज्य का भ्रमण किया है, इसलिए तुम अवश्य ही जानते होगे कि इस वक्त जनता की आवश्यकताएं क्या हैं ? तुमने मुझे कुछ अनुभवी विशेषज्ञों से परामर्श करने के लिए कहा है। इस दिशा में भी मुझे तुम जैसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी। बोलो, तुम्हारा क्या

८
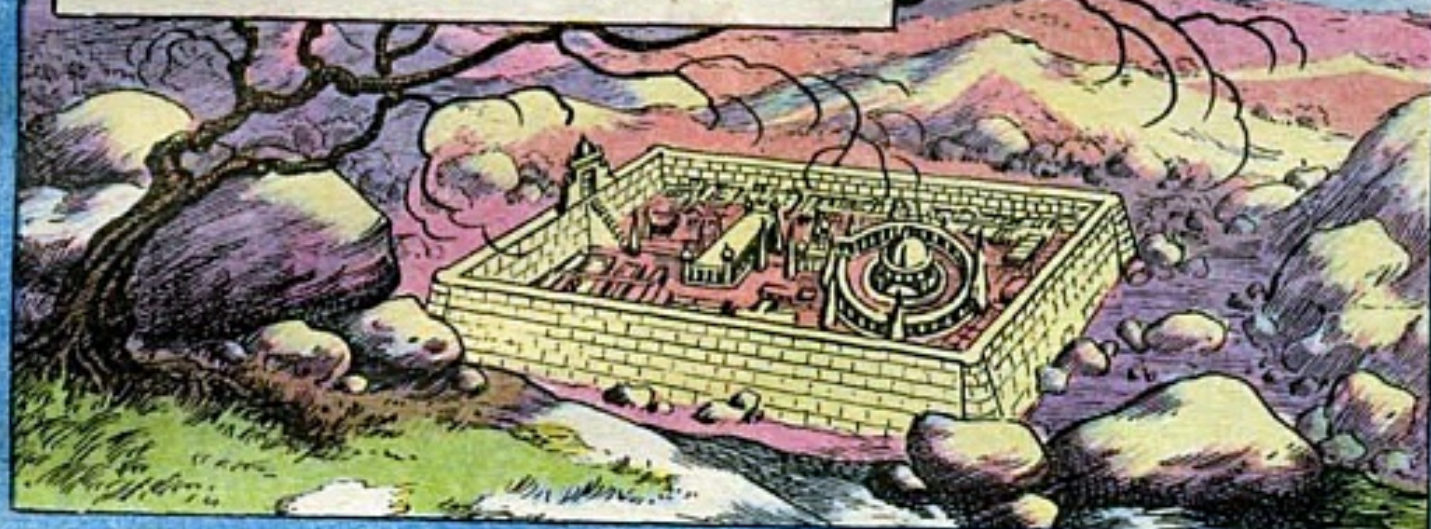
[जादूगरनी कापालिनी ने चंद्रवर्मा को खाना खिलाया। इसके बाद उसने चंद्रवर्मा से अनुरोध किया कि वह प्रसिद्ध मांत्रिक शंखु के यहाँ से अपूर्व शक्तियों वाला शंख ले आये। उसने उस शंख का रहस्य बताते हुए कहा कि कुछ जड़ी-बूटियों से पकाया गया काढ़ा अगर वह उस शंख में भर कर पी लेगी तो अगले एक हज़ार वर्ष तक यौवन प्राप्त कर जीवित रह सकेगी। चंद्रवर्मा शंख की खोज में चल पड़ा। आगे पढ़िये...]

कालनाग मार्ग दिखाता हुआ आगे-आगे चलने लगा। चंद्रवर्मा उसका अनुसरण कर रहा था। नाग अपने तीनों सिरों को सभी दिशाओं में घुमाता और बीच-बीच में ज़ोर से फूत्कार करता। घने वृक्षों के नीचे चंद्रवर्मा को अपना शिकार बनाने के लिए अनेक खूँख्वार जानवर और ज़हरीले सर्प सामने आये, पर कालनाग को देख वे तितर-बितर हो इधर-उधर भाग गये।

वे उस घने जंगल में अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि चंद्रवर्मा के मन में अचानक एक शंका हुई। जादूगरनी ने कालनाग के साथ इस प्रकार बातचीत की थी, जैसे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से करता है और उसे मानव-भाषा में ही आदेश दिया था। इसका मतलब है कि कालनाग मनुष्य की भाषा समझ लेता है। पर कालनाग को उसने मनुष्य की भाषा में बात करते हुए नहीं सुना था। अगर वह कोशिश करे तो यह पता

लग जायेगा कि कालनाग बात कर सकता है या नहीं !

यह सोचकर चंद्रवर्मा कालनाग के समीप पहुँचा और बोला, "कालनाग ! इस बात की मुझे बड़ी खुशी है कि इस घने जंगल में तुम मेरा मार्गदर्शन करते हो। वरना मैं रास्ता भटक जाता और इस जंगल में भटका करता। तुम्हारी इस सहायता को मैं कभी भूल नहीं सकता। लेकिन मुझे यह बताओ, इस बियाबान जंगल को पार करने के लिए हमें और कितनी दूर चलना पड़ेगा ?"

चंद्रवर्मा का सवाल सुनते ही कालनाग एकाएक रुक गया। उसके तीनों सिर एक साथ ज़मीन से ऊपर उठे और वह चंद्रवर्मा की आँखों में ताकने लगा। फिर उसने अपनी जीभें बाहर निकालीं और मन्द ध्वनि की। वह ध्वनि हमेशा की फूत्कार-ध्वनि जैसी नहीं थी। उसमें एक के पीछे एक कई प्रकार की ध्वनियां मिली हुई थीं।

चंद्रवर्मा उन विचित्र ध्वनियों को सुनकर और भी सचेत हो गया। काल नाग ने चंद्रवर्मा का प्रश्न समझ लिया है, यह बताने के लिए उसने अपने तीनों सिरों को इधर-उधर घुमाया और अपने मार्ग से हट कर दूसरी दिशा में चलने लगा। उसने चंद्रवर्मा को अनुसरण करने का संकेत किया।

चंद्रवर्मा ने भाँप लिया कि कालनाग उसे कोई रहस्य की बात बताना चाहता है। वह कालनाग का संकेत पाकर बिना किसी शंका के कालनाग का अनुसरण करने लगा। घने वृक्षों के अंधेरे सायों से निकल कर वे एक झरने के पास पहुँचे।

कालनाग उस झरने के निकट रुक गया और अपने फण उठाकर झरने के उस पार के एक विचित्र वृक्ष की ओर देखने लगा। चंद्रवर्मा ने भी अपनी दृष्टि उस वृक्ष की तरफ़ डाली। उसे उस वृक्ष से आती हुई विकृत अट्टहास-ध्वनियाँ सुनाई दीं। चंद्रवर्मा उन ध्वनियों को सुनकर एकदम सहम गया, फिर वह उस वृक्ष को देखकर आपाद-मस्तक काँप उठा।

चालीस-पचास फुट ऊँचे गुम्बद की तरह फैले उस विचित्र वृक्ष की शाखाओं में जानवरों तथा पक्षियों के सिर लटक रहे थे। चंद्रवर्मा

और कालनाग को देखते ही वे सिर जोर-शोर से जानवरों और पक्षियों की आवाज़ें करने लगे।

चंद्रवर्मा ने थोड़ी देर बाद वृक्ष की तरफ़ से आँखें फेरकर कालनाग की तरफ़ देखा। कालनाग चुपचाप उसी की ओर देख रहा था। चंद्रवर्मा ने हाथ से उस विचित्र-वृक्ष की तरफ़ संकेत करके पूछा, "कालनाग ! वह कोई वृक्ष है या इस रूप में स्थित कोई भयंकर राक्षस है?"

कालनाग बिना कोई ध्वनि किये सिरों को हिलाता हुआ चुपचाप झरने की तरफ़ चल पड़ा। चंद्रवर्मा उसके पीछे चलने लगा। काल नाग घूमकर झरने के पार गया और उस विचित्र वृक्ष के समीप पहुँच कर रुक गया। चंद्रवर्मा भी उस वृक्ष के निकट पहुँचा। तब वे चिल्लाहटें और भी भयानक हो उठीं। ऐसा लग रहा था कि कानों के परदे फट जायेंगे। चंद्रवर्मा अपने दिल को पत्थर बनाकर खड़ा रहा। अगर कालनाग उसे दग़ा देकर उसका अंत करना चाहे, तो वह इस हालत में कुछ नहीं कर सकता। उस जंगल में प्रवेश करते ही वह जादूगरनी कापालिनी की शक्ति के आधीन हो चुका है। उसका शारीरिक बल या म्यान में रखी यह तलवार उसकी रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं। ऐसी हालत में अगर उसका कोई हित या अहित होता है तो वह उस जादूगरनी के आदेश से ही हो सकता है।

चंद्रवर्मा इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था। कालनाग उसके और पास सरक आया और अपने फण उठाकर वृक्ष की ओर संकेत करने लगा।
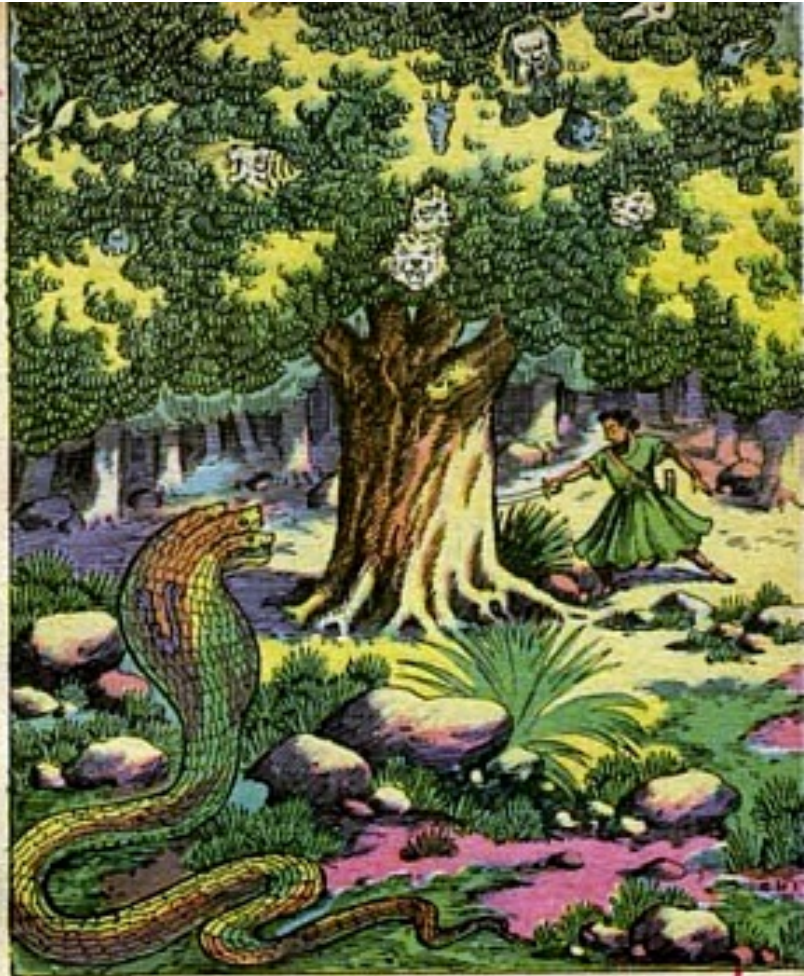
चंद्रवर्मा ने समझ लिया कि कालनाग उसे वृक्ष पर चढ़ने का संकेत कर रहा है। उसने म्यान से तलवार निकाली और बड़े निडर भाव से वृक्ष के पास पहुँच कर उससे उसके तने पर आघात किया। दूसरे ही क्षण जंगल हाहाकार की आवाज़ों से गूँज उठा।

कालनाग ने भी किंचित् भय से अपनी देह सिकोड़ ली और चंद्रवर्मा के सामने आया।

चंद्रवर्मा का ध्यान कहीं और था। वह सोच रहा था कि वृक्ष से लटकनेवाले तथा अपनी भयानक चीत्कारों से उसे भयभीत करने का प्रयास करने वाले पशु-पक्षियों के इन सिरों को तलवार से काटकर फेंक दिया जाये या नहीं।

कालनाग वृक्ष के और पास गया और उसके तने से लिपट गया। उसने वृक्ष की शाखाओं पर अपनी दृष्टि डाली। उसके आशय को समझने की कोशिश करते हुए चंद्रवर्मा बड़ी तेज़ी से पेड़ पर चढ़ने लगा।

वृक्ष पर लटकनेवाले वे सिर और भी भयावह आवाज़ करने लगे। चंद्रवर्मा निर्भय होकर डालों के बीच पहुँचा और उसने दाढ़ोंवाले बाघ के लटकते एक सिर को डाल सहित काट डाला। दूसरे ही क्षण वह सिर धम्म की आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ा। चंद्रवर्मा ने जब देखा कि ज़मीन पर गिरते ही बाघ का वह सिर एक फल के रूप में बदल गया है तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

चंद्रवर्मा तुरन्त पेड़ पर से उतर आया। उसने देखा, कालनाग ने वह फल अपने मुँह में दबा रखा है। वह चंद्रवर्मा के पास आया। चंद्रवर्मा ने वह फल हाथ में लिया और उसे चख कर देखा। तभी उसे कालनाग के हँसने की ध्वनि सुनाई दी और उसने कालनाग को कहते सुना—

"चंद्रवर्मा! अब तुम्हें इस बात का पता चल गया न, इस वृक्ष पर लटकने वाले विचित्र सिरों का रहस्य क्या है!"

कालनाग की बातों से चंद्रवर्मा को सारा भेद समझ में आ गया। उस फल को चखने के बाद वह कालनाग की भाषा को स्पष्ट रूप से समझ सकता था। अब तक कालनाग की बातों को उसे केवल संकेत से समझना पड़ता था, पर अब वह उन्हें स्पष्ट रूप से जान सकता था।

"चंद्रवर्मा! इस फल को चखने के बाद तुम पशु-पक्षियों की भाषा आसानी से समझ सकोगे। मांत्रिक शंखु के पास पहुँचने और उसके यहाँ से उस शक्ति शाली शंख को हासिल करने के लिए यह भाषा तुम्हारे लिए ज़्यादा उपयोगी सिद्ध होगी। इस समय तुम सभी प्राणियों की भाषा समझ सकते हो। लेकिन, तुम्हें उस मांत्रिक के सेवक 'अग्निपक्षी' से सावधान रहना होगा। वह अत्यन्त ख़तरनाक पक्षी है। फिर भी, तुम अपने प्रयत्न में विजय प्राप्त करोगे, मुझे ऐसी आशा है।" कालनाग ने कहा।

चंद्रवर्मा बहुत अधिक उत्साह में आ गया। उसने कालनाग की तरफ़ कृतज्ञ होकर देखा और कहा, "कालनाग ! तुमने मेरी बड़ी मदद की, बताओ, इसके बदले में तुम मुझसे क्या चाहते हो ?"

कालनाग ने व्यथित होकर अपना सिर नीचे झुका लिया, फिर धीमी आवाज़ में बोला, "युवराज ! तुम्हें तो मेरी एक छोटी-सी मदद करनी होगी। लेकिन, जब तक तुम मांत्रिक शंखु के यहां से वह शक्तिशाली शंख लेकर आते हो, तब तक मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा करनी होगी।"

कालनाग के मुँह से यह उत्तर पाने के बाद चंद्रवर्मा के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि क्यों न कालनाग की बात अभी जान ले। उसने कालनाग की तरफ़ संशयभरी निगाह डालकर पूछा, "कालनाग ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम क्या सचमुच सर्प हो, या मानव हो ?"

"एक समय था, जब मैं सर्प नहीं था। मैं शंखु का शिष्य, एक मानव था। शंखु के आदेश पर मैं कापालिनी की हानि करने निकला लेकिन दुर्भाग्य से मैं अपने इस प्रयत्न में सफल न हो सका। जिस का भयंकर परिणाम मुझे भोगना पड़ा। और कापालिनी के हाथों पड़कर यों एक सर्प बन गया। वह मुझसे अपने सेवक जैसा व्यवहार करती है लेकिन मुझ पर विश्वास नहीं करती, आज भी मुझ पर शंका करती है। फिर भी मुझे अपने उज्वल भविष्य के बारे में पूर्ण विश्वास है। जब तुम अपने इस प्रयत्न में विजय प्राप्त करके लौट आओगे, तो इस तुच्छ जीवन से मेरा उद्धार कर सकोगे।" कालनाग ने बताया।

"इस छोटी सी बात के लिए तुम्हें इतने समय तक इन्तज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। हम अभी कापालिनी के पास लौटते हैं। मैं उससे अनुरोध करूँगा कि वह तुम्हें फिर से मानव-रूप दिलाये। मुझे आशा है, वह मेरी बात का विरोध नहीं करेगी।" चंद्रवर्मा ने नाग को आश्वासन दिया।

पर कालनाग ने चंद्रवर्मा की बात नहीं मानी। उसने कहा, "युवराज ! जल्दबाजी में आकर कोई काम नहीं करना चाहिए। हमें

सोच-समझ कर क़दम उठाना हर हालत में उचित होगा। वरना हमें बाद को जाकर अपनी करनी पर पछताना पड़ेगा। अलावा इसके तुम कापालिनी के स्वभाव को नहीं जानते। वह बड़ी शंकालु प्रकृति की है। वह यह भी सोच सकती है कि हम दोनों मिलकर उसकी हानि करने की बात सोच रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो मेरे साथ तुम्हारा भी अनिष्ट होगा। मैं अनेक वर्षों से सर्प का जीवन बिता रहा हूँ। थोड़े दिन और इन्तज़ार करने में मुझे कोई विशेष कष्ट नहीं होगा। किसी का विश्वास पात्र बने रह कर ही अपना कार्य आसानी से साध लिया जा सकता है। हमें इस बात का सदा ख्याल रखना चाहिए कि हम पर कापालिनी के मन में जरा सा भी सन्देह पैदा न हो। हमें सदा इस बात का ख्याल रखना चाहिए और हमें अत्यन्त जागरूक होकर अपने व्यवहार को सन्देह से मुक्त रखना चाहिए। हमारे मन की बात को ताड़ने का उसे थोड़ा सा भी मौक़ा नहीं देना चाहिए। वह अत्यन्त चालाक और धूर्त है! मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि वह बाद को जाकर हमारे उपकार का प्रत्युपकार अवश्य करेगी। इसलिए हमें सावधानी से काम लेना चाहिए! साथ ही मैं यह भी नहीं कह सकता कि हम से फ़ायदा उठाने के बाद हमारी हानि करेगी। ऐसी हालत में हमें विवेक से काम लेना होगा। अपनी सूझ-बूझ पर ज़्यादा भरोसा रखना हर हालत में उचित होगा! कुछ लोगों की सलाहें और सुझाव कभी-कभी बहुत लाभदायक सिद्ध होते हैं, कुछ विशेष परिस्थितियों में हानि कारक भी साबित हो सकते हैं!"

चंद्रवर्मा को कालनाग की बातों में सच्चाई प्रतीत हुई। ये मांत्रिक और जादूगर लोग विश्वास करने योग्य नहीं होते। इस बात की कल्पना तक करना कठिन है कि ये लोग कब, किसके बारे में क्या शंका करने लगें और किसी का क्या नुक़सान कर दें।

चंद्रवर्मा ने कालनाग की बात मान ली और वहाँ से चल पड़ा। कालनाग पहले की तरह मार्गदर्शन करता हुआ आगे बढ़ चला।

दोपहर हो चुकी थी, जब उन्होंने वह घना जंगल पार किया। सामने बड़े-बड़े पर्वत और

घाटियों के प्रदेश नज़र आ रहे थे। वहाँ पेड़-पौधे भी थे, पर वह सारा इलाका जंगल जैसा नहीं था।

कालनाग ने रुक कर कहा, "युवराज ! अब मैं लौटूँगा। आगे तुम्हें अकेले ही जाना पड़ेगा। उन पहाड़ों और घाटियों में तुम्हें क़दम-क़दम पर ख़तरों का सामना करना पड़ेगा। पर तुम हिम्मत न हारना ! तुम पशु-पक्षियों की भाषा से परिचित हो। तुममें शूरता है। मेरा पूरा विश्वास है, तुम अवश्य ही अपने प्रयत्न में विजय प्राप्त करोगे !"

कालनाग ने चंद्रवर्मा से विदा ली और फूत्कार करता हुआ पीछे लौट पड़ा। चंद्रवर्मा तब तक उसे देखता रहा, जब तक वह आँखों से ओझल न होगया। फिर दीर्घ निःश्वास लेकर उसने अपने लक्ष्य की तरफ़ क़दम बढ़ाये।

सारा मार्ग छोटे-बड़े पत्थरों व कंटीली झाड़ियों से भरा पड़ा था। जहाँ-तहाँ आसमान को छूनेवाले लंबे वृक्ष थे। उस प्रदेश में विचरण करनेवाले पशुओं के गर्जन व पक्षियों के कलरव को चंद्रवर्मा स्पष्ट समझ रहा था। वह उनकी बोली का हर अर्थ समझने में समर्थ था।

वे प्राणी एक-दूसरे को चेतावनी दे रहे थे कि सावधान रहो, इस प्रदेश में किसी नये प्राणी का प्रवेश हुआ है।

तीसरा प्रहर हो चला था। चंद्रवर्मा अब उत्तरी दिशा में मुड़ा। वह एकदम थक गया था। भूख और प्यास से उसका बुरा हाल था। वह एक वृक्ष की छाया में उसके तने से सटकर बैठ गया और उसने चारों तरफ़ निगाह दौड़ायी। उसे कहीं फल-फूलवाले वृक्ष दिखाई न दिये। कंद-मूल भी कहाँ से मिलते ! चारों तरफ़ टीलों और कंटीली झाड़ियों के अलावा और कुछ दिखाई न दे रहा था।

चंद्रवर्मा ने सोचा, 'यहाँ अपना समय बरबाद करने से कोई लाभ नहीं है। शायद आगे कहीं फलों के वृक्ष मिलें' और वह यह सोचकर आगे बढ़ चला।

वह थोड़ी दूर सीधा चलता गया। फिर एक मोड़ पर मुड़ा तो देखता क्या है कि सामने फलों के बोझ से झुके हुए वृक्षों की क़तारे खड़ी हैं।

रस से भरे उन फलों को देखते ही चंद्रवर्मा का उत्साह दूना हो गया। वह तेजी से उन वृक्षों की तरफ बढ़ चला। अभी कुछ ही क्षण बीते होंगे कि उसे लगा कि गर्म हवा के झोंके उसके शरीर का स्पर्श कर रहे हैं।

चंद्रवर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ। अभी वह कुछ ही कदम और बढ़ा था कि उसने देखा कि उसके पास ही नीचे एक नदी बह रही है और उसमें से भाप के गोले उठ रहे हैं।

उस विचित्र नदी को देखकर चंद्रवर्मा चकित रह गाया। उसने अनुमान लगाया कि पास ही कोई अग्निपर्वत होना चाहिए, जहाँ के गरम स्रोत का पानी नदी का रूप धारण कर बह रहा है। फलों से झुके वे सारे वृक्ष इस नदी के पार ही थे। अगर उसे भूख से मरना नहीं है तो उसे किसी भी हालत में इस प्रवाह को पार करना होगा, आग की इस नदी को !

चंद्रवर्मा रुक कर अपने आगे के कार्यक्रम का विचार करने लगा। उसी वक्त एक महासर्प एक टीले पर से सीध में उठ कर इस प्रकार झुक गया कि उसका फणवाला हिस्सा नदी के उस पार तक पहुँच गया। वह सिर के बल आगे को रेंग रहा था और धीरे-धीरे अपनी पूँछ हिला रहा था। उसी वक्त चार-पाँच बन्दर टीले पर से उतरे और नदी पर रस्सी के पुल की तरह पड़े सर्प के शरीर पर से दौडते हुए नदी के उस पार पहुँच गये।

चंद्रवर्मा की बुद्धि बड़ी तेज़ी से काम करने लगी। उसने समझ लिया कि अगर इस आग की धारा को पार करना है तो उसे भी इन बन्दरों की तरह सर्प के शरीर पर से चलना होगा। सर्प अपना शरीर उस ओर खींच ले, इससे पहले ही उसे इस कार्य को पूरा करना होगा।

चंद्रवर्मा के पास सोचने का ज्यादा समय नहीं था। उस ने तत्काल यह निर्णय कर लिया कि उसे भी बन्दरों के जैसे सर्प के शरीर पर से चल कर नदी पार करना है। वह जल्दी से सर्प के पास पहुँचा और उस पार उतरने के लिए उसकी पीठ पर से दौड़ पड़ा।

(क्रमशः)
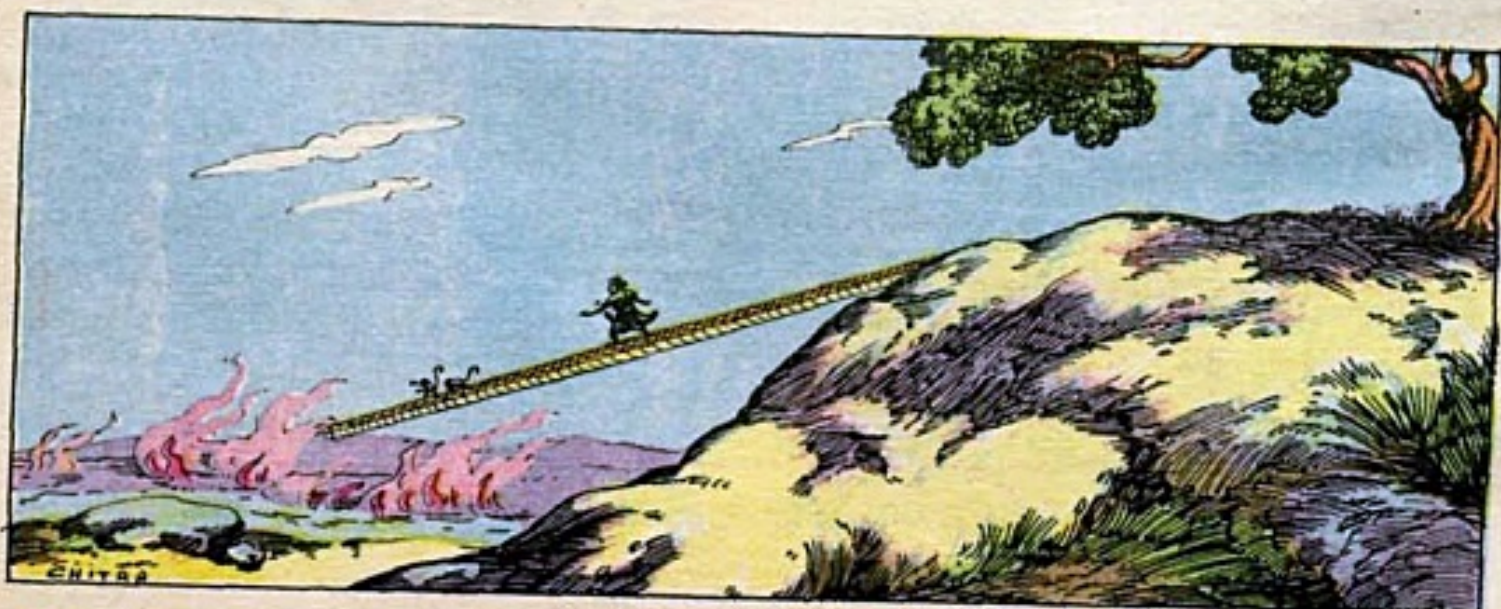
मंत्री और मांत्रिक

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आये। पेड़ पर से शव उतारा और उसे कंधे पर डालकर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करने वाले बेताल ने पूछा, "राजन् ! आपको तो इस अर्धरात्रि के समय अपने शयनागार में मख़मल की शैया पर सोना चाहिए था। अपनी निद्रा को छोड़कर आप इस भयानक श्मशान में किस हित के लिए जागते हुए भटक रहे हैं ? मैं समझ नहीं पा रहा। यह बात सर्वविदित है कि राजा स्वार्थी होते हैं और समय आने पर अपना हित करनेवाले उत्तम पुरुषों का भी निर्दयतापूर्वक दलन कर सकते हैं। कहीं आप अपने स्वार्थ के लिए तो इतनी यातनाएं नहीं झेल रहे ? अगर यह सत्य है तो मैं आपको आपके ही जैसे एक राजा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिह सुनिये !"

बेताल ने कहानी सुनाना प्रारम्भ किया:

अद्भुत मंत्रशक्तियों वाला एक मांत्रिक था। नाम था शरभ। एक दिन सूर्योदय के समय नदी में स्नान करके वह किनारे के विशाल बट-वृक्ष के नीचे बैठ कर अपनी पूजा कर रहा था कि तभी उसके पास एक आदमी आया। उसकी वेशभूषा देखकर आसानी से यह जाना जा सकता था कि वह भी एक मांत्रिक है। मांत्रिक शरभ अपनी पूजा समाप्त कर चलने को हुआ, तभी उसकी दृष्टि इस नवागन्तुक मांत्रिक पर पड़ी।

शरभ ने उस आदमी को कुछ विस्मय से देखा।

शरभ का आश्चर्य देख उस नवागन्तुक ने मुस्करा कर पूछा, "शरभ नाम के मांत्रिक तुम्हीं हो न ?"

यह सवाल सुनकर शरभ के अहम् को चोट लगी। वह क्रुद्ध होकर बोला, "इस राज्य के अधिकांश लोग जानते हैं कि मैं मंत्रशास्त्र का ज्ञाता और अद्भुत मंत्र शक्तियों का स्वामी हूँ। तुम क्या सोचते हो कि मैंने यों ही कुछ मंत्र कंठस्थ कर लिये हैं ?"

"नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं ! पर मैं भी तुम्हारे पड़ोसी देश का मांत्रिक हूँ। मेरा नाम देवन है। मैं तुम से किसी बात में कम नहीं हूँ। मेरी अद्भुत मंत्र शक्तियों के बारे में उस देश का बच्चा-बच्चा जानता है।" आगन्तुक ने अपना परिचय दिया।

"लेकिन तुम को यह मालूम होना चाहिए कि एक ही समय में दो समान शक्तियोंवाले मांत्रिकों का रहना असंभव है !" शरभ ने कहा

"यह बात सही है। पर क्या तुम यह प्रमाणित कर सकते हो कि तुम्हारे पास मुझसे बढ़कर मंत्र-शक्तियाँ हैं !" देवन ने क्रोध में आकर चुनौती दी।

"क्यों नहीं ? मेरे पास ऐसी मंत्रशक्ति है कि मैं सारा जल सुखाकर राज्य में त्राहि-त्राहि मचा सकता हूँ !" शरभ ने अपनी अपूर्वशक्ति का परिचय दिया।

"मैं मिनटों में जल पैदा करके प्रजा के प्राण बचा सकता हूँ।'" देवन ने भी अपनी शक्ति के बारे में बताया।

यह उत्तर सुनकर शरभ रोष में आ गया और

अकड़कर बोला, "क्या मैं तुमसे कम हूँ ? मैं बंजर और उजाड़ भूमि को शस्य-श्यामला बना सकता हूँ ।"

"बस, इतनी-सी ही बात है ? मैं शस्य-श्यामला भूमि को पल भर में राख की ढेरी बना सकता हूँ ।" देवन ने रोष में आकर चुनौती दी ।

शरभ खीज उठा, और गरज कर बोला, "यह निरर्थक वितण्डावाद क्यों ? तुम मेरी अद्भुत शक्तियों पर विश्वास कर सको, बताओ इसके लिए मुझे अभी क्या करना होगा ? मैं इसी वक्त अपनी शक्तियाँ प्रमाणित कर सकता हूँ ।"

"अगर तुम इतने महान मांत्रिक हो तो सबसे पहले मैं तुम्हारी कुछ परीक्षाएँ लेना चाहता हूँ। बताओ, क्या तुम दीर्घकाल रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को भी स्वस्थ कर सकते हो ?" देवन ने पूछा ।

"मैं निश्चय ही उन्हें पूर्ण रूप से स्वस्थ कर सकता हूँ ।" शरभ ने जवाब दिया ।

"क्या तुम वृष्टि कर सकते हो ?" देवन ने फिर पूछा ।

शरभ ने स्वीकृति में सिर हिलाया ।

देवन ने क्षण भर रुक कर फिर पूछा, "मनुष्यों में कौन सज्जन हैं, कौन दुष्ट हैं, इसका सही निर्णय कर सकते हो ?"

शरभ ने इस बार भी सिर हिलाकर स्वीकृति दी ।

"क्या तुम अपने सामने वाले व्यक्ति के मन की बात को ठीक-ठीक भाँप कर तत्काल प्रकट कर सकते हो ?" देवन ने फिर सवाल फिया ।

शरभ ने कहा, "हाँ, हाँ, निश्चय ही कर सकता हूँ। पर तुम इस तरह से जो मेरी अनेक परीक्षाएँ ले रहे हो, अपने बारे में भी तो कुछ कहो ! क्या तुम वे अद्भुत कार्य कर सकते हो, जो मैं कर सकता हूँ ?"

"हाँ, इस में तुम्हें सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है। मैं निश्चय ही वे सारे कार्य कर सकता हूँ ! जो तुम करने की क्षमता रखते हो ।" देवन ने तुरन्त उत्तर दिया ।

"यों ही बात बनाने से क्या लाभ ? आओ, कोई शर्त लगा ली जाये !" शरभ ने कहा ।

"कैसी शर्त ? तुम्हीं बताओ, " देवन ने जिज्ञासा प्रकट की ।

"इसका निर्णय तुम्हीं कर लो ! मैं सभी शर्तों के लिए तैयार हूँ।" शरभ ने पूर्ण विश्वास से कहा ।

देवन पल भर रुक कर बोला, "तब तो तुम अच्छी तरह से कान खोलकर सुन लो । जो पराजित होगा, उसे जीतनेवाले के पैरों पर गिरना होगा । और फिर वह मंत्र-शक्तियों का प्रयोग नहीं करेगा ।"

"मुझे यह शर्त स्वीकार है !" शरभ ने अपनी स्वीकृति दी ।

देवन ने आगे कहा, "मेरी एक छोटी-सी शर्त और भी है। पहले तुम अपनी मंत्र-शक्तियों का प्रयोग करो, फिर मैं अपनी मंत्र-शक्तियों का प्रदर्शन करूँगा ।"

शरभ ने देवन की यह बात भी मान ली । दोनों मांत्रिक वहाँ से चल पड़े और दोपहर तक एक गाँव में पहुँचे । एक अरसे से वहाँ बरसात न हुई थी, सारे खेत बंजर बने हुए थे। कुएँ और तालाब सूख गये थे, जनता पानी के लिए तरस रही थी ।

"शरभ ! अब यहाँ तुम अपनी अद्भुत मंत्र-शक्ति का चमत्कार दिखाओ !" देवन ने कहा ।

शरभ ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और कुछ क्षण तक होंठ फड़फड़ाकर कुछ जपता रहा । फिर अपनी तर्जनी उँगली को हवा में लहराकर उसे आँखों से छुआया । फिर क्या था, ऐसा चमत्कार हुआ कि दूसरे ही क्षण सारे

आसमान में बादल छा गये और बादलों की गरज एवं बिजली की चमक के साथ होने लगी ।

शरभ ने बड़े घमंड के साथ देवन की तरफ़ देखा ।

देवन ने शरभ की तारीफ़ की और हँस कर बोला, "मैं तुम्हें झूठा मांत्रिक समझ रहा था । अब मुझे पता लगा कि तुम्हारे पास सचमुच ही थोड़ी-बहुत मंत्रशक्ति है !"

यह तो मेरे लिए बड़े अपमान की बात है । तुम मुझे साधारण मांत्रिक और मेरी मंत्र-शक्तियों को मामूली मानते हो । ये शक्तियां साधारण नहीं हैं । तुम अपने मंत्रों के बल पर पानी बरसा कर मुझे दिखाओ न !" शरभ ने कुछ रुष्ट होकर कहा ।

देवन मंद हँसी हँसकर बोला, "क्या तुम शर्तों की बात भूल गये ? पहले तुम अपनी सारी मंत्र-शक्तियों का प्रदर्शन करोगे, हमारी यही शर्त थी न ?"

"यही सही ! मैं ही अपनी मंत्र-शक्तियों का पहले प्रदर्शन करूँगा ।" शरभ ने कहा ।

"चलो, हम राजधानी में चलते हैं । मैंने सुना है इस देश की राजकुमारी कई वर्षों से रोग-पीड़ित है ! कोई वैद्य उसे स्वस्थ नहीं कर सका । अब तुम अपनी मंत्र-शक्ति दिखाओ और उसे स्वस्थ करो !" देवन ने शरभ को अगले प्रयोग के लिए सुझाव दिया ।

"ठीक है ! राजधानी में चलो !" शरभ ने कहा ।

दोनों राजधानी में पहुँचे और राजा से मिले ।

राजा उन मांत्रिकों को राजकुमारी के कक्ष में ले गये। शरभ राजकुमारी की शैया के पास खड़ा हो गया और तर्जनी से उसकी आँखों का स्पर्श कर कुछ क्षण तक मंत्र जपता रहा। थोड़ी ही देर में राजकुमारी स्वयं उठकर बैठ गयी। वह मुस्करा रही थी। कई वर्षों से उसे पीड़ित कर रहा रोग अदृश्य हो गया था। राजा बहुत प्रसन्न हुए।

देवन ने एकान्त में राजा से कुछ देर बात की, फिर शरभ के पास लौट कर कहा, "राजा के मन में यह सन्देह है कि उनके राज्य में कुछ षडयंत्रकारी लोग हैं। उनका विवरण दो !"

शरभ ने राजा के सभासदों एवं सैनिकों की परख की और उनमें जो षड्यंत्रकारी थे, उन्हें संकेत से देवन को बता दिया। देवन से सारा समाचार जानकर राजा ने उन षडयंत्रकारियों को बन्दी बना कर कारागार में डाल दिया।

राज दरबार लगा। देवन ने मुक्त कंठ से शरभ की प्रशंसा की और उसे महान मांत्रिक बताया। फिर शरभ से कहा, "हमारी शर्तों के अनुसार तुम्हें एक बार और अपनी मंत्र-शक्तियों का प्रदर्शन करना होगा। यह प्रयोग पूरा होने के बाद मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार अपनी मंत्र-शक्तियों का प्रदर्शन करूँगा। बताओ, मैं इस वक्त अपने मन में क्या सोच रहा हूँ ?"

शरभ ने आँखें बन्द कर लीं, फिर तर्जनी से अपनी आँखों का स्पर्श किया और दो क्षण बाद आँखें खोलकर देवन की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देख कर कहा, "क्या बता दूँ कि तुम अपने मन में क्या सोच रहे हो ? तुम मेरी सच्ची बात को झूठ बताकर मुझे पराजित घोषित करने का विचार कर रहे हो और इसके बाद मेरी तर्जनी कटवाकर मुझे मेरी मंत्र-शक्तियों से वंचित करना चाहते हो !"

शरभ के मुँह से अपने मन की बातें सुनकर देवन एकदम चकित रह गया। इतने में शरभ दाँत पीसकार बोला, "अरे दुष्ट ! मैं समझ गया हूँ कि तू कौन है ? तेरा नाम देवन नहीं, बल्कि देवदत्त है। तू मांत्रिक नहीं, इस देश का मंत्री है। जब सारी औषधियाँ बेकार हो गयीं तो मेरी मंत्रशक्ति से राजकुमारी को स्वस्थ करने के लिए तूने यह कपट-नाटक रचा है।"

राजा ने तुरन्त कुछ संकेत दिया और चार राजभट शरभ पर झपट पड़े । उन्होंने उसके हाथ बाँध दिये और एक बोरे में उल्टे मुँह पटक कर बोरे का मुँह बंद कर दिया ।

"इसे ले जाकर इसका शिरच्छेद करो !" राजा ने उन राजभटों को आज्ञा दी ।

राजा का आदेश पाकर वे चारों सैनिक शरभ को वहाँ से खींच ले गये ।

बेताल ने अपनी कहानी पूरी कर विक्रमार्क से पूछा, "राजन् ! उस राजा ने शरभ को शिरच्छेद का दंड दिया, क्या यह अन्याय नहीं है ? उसने राजकुमारी की दीर्घकालीन बीमारी को अपनी मंत्र शक्ति से मिटा दिया । साथ ही, वह राजा पर क्रोधित नहीं हुआ, बल्कि अपने को मांत्रिक कह कर झूठ बोलने वाले मंत्री देवदत्त पर उसे क्रोध आया । राजा का कर्त्तव्य था कि वह अपने हितकारी शरभ का स्वागत-सत्कार करता । ऐसा न करके उसने उसे मृत्युदंड दिया । क्या यह अनुचित नहीं है ? इस सन्देह का समाधान अगर आप जानते हुए भी न करेंगे, तो आपका सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा ।"

विक्रमार्क ने समाधान देते हुए कहा, "राजा को सबकी कुशलता और कल्याण को ध्यान में रखकर कार्य करना पड़ता है । उसके ऊपर न केवल अपना और अपने परिवार का, बल्कि सारे देश का उत्तरदायित्व लेता है । शरभ अद्भुत मंत्र-शक्तियों का ज्ञाता था । वह उन शक्तियों का प्रयोग प्रजा के हित और अहित दोनों के लिए कर सकता था । जब राजा ने देखा कि उसके अन्दर मंत्री के प्रति वैरभाव पैदा होगया है तो वह उसके प्रति विश्वासी न रहा । जो मांत्रिक मंत्री के प्रति वैरभाव रख सकता है, वह आवश्यकता पड़ने पर राजा के प्रति भी शत्रुभाव रख सकता है । ऐसी अद्भुत मंत्र-शक्तियों वाले व्यक्ति से हमेशा खतरा बना रहेगा, यह सोचकर राजा ने शरभ के शिरच्छेद की आज्ञा दी !"

राजा के इस प्रकार मौन होते ही बेताल शव के साथ गायब होकर पुनः पेड़ पर जा बैठा ।

(कल्पित)

अमीरी का रहस्य

रामदास जब गणेशपुर में आया था तो उसके पास फूटी कौड़ी न थी। एक साल के अन्दर उसने एक एकड़ ज़मीन ख़रीद ली और चार साल के अन्दर उसके पास इतना धन हो गया कि वह गाँव के अमीरों में से एक माना जाने लगा।

गणेशपुर के एक किसान मंगलनाथ के मन में यह जानने की बड़ी उत्सुकता हुई कि आख़िर इतने थोड़े समय में रामदास इतना अमीर कैसे हो गया ? लाख माथापच्ची करने पर भी उसके दिमाग में कुछ न आया। उसने रामदास के मुँह से ही यह रहस्य जानने का निश्चय किया और एक दिन शाम को उसके घर जा पहुँचा।

उस वक्त रामदास एक छोटा-सा दिया जलाकर आले में रख रहा था। उसने मंगलनाथ को देखकर आदरपूर्वक उसका स्वागत किया और पूछा, "मित्र ! कैसे आना हुआ ? क्या कोई ज़रूरी काम है ?"

"बस यों ही चला आया !" कह कर मंगलनाथ ने अपने आने का कारण बताया और अंत में कहा, "भाई रामदास ! हम दोनों एक ही गाँव के हैं न ! जल्दी धनवान बन जाने का वह रहस्य मुझे भी बता दो !"

"इसमें रहस्य जैसी कोई बात नहीं।" कह कर रामदास उठ खड़ा हुआ और एक चटाई लाकर मंगलनाथ के बैठने के लिए बिछा दी। रामदास ने दिया बढ़ाया और मंगलनाथ की बगल में बैठ गया।

मंगलनाथ विस्मित होकर बोला, 'रामदास ! तुमने शाम के समय जलाये इस दीपक को बुझा क्यों दिया ?"

रामदास बड़े इतमीनान से बोला, "इस तरह आराम से बैठकर बात करते समय दीपक का तेल नाहक़ क्यों खर्च किया जाये ?"

यह जवाब सुनकर मंगलनाथ उठ खड़ा हुआ और बोला, "अच्छा, अब मैं चलता हूँ।"

"अरे भाई ! तुम कोई रहस्य जानने के लिए आये थे न ?" रामदास ने पूछा।

"तुम्हारे मुँह से सुने बिना ही मैं उस रहस्य को समझ गया हूँ।" कहकर मंगलनाथ अपने घर की ओर चल पड़ा।
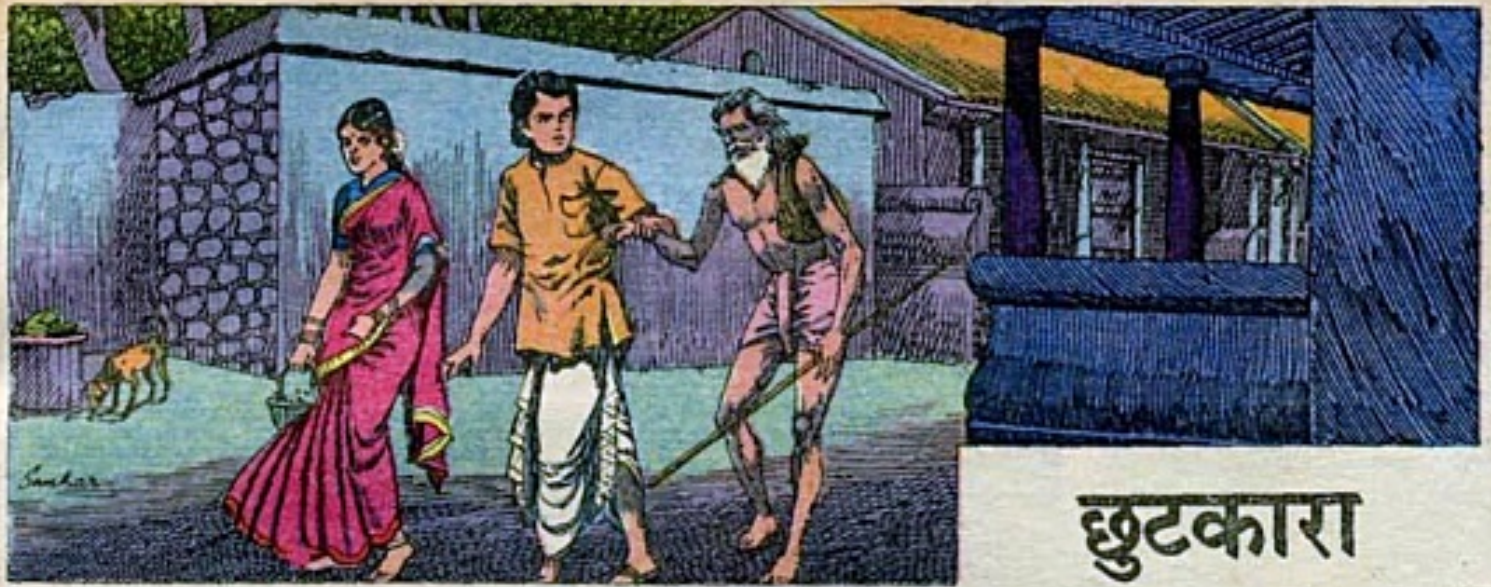
छुटकारा

विनायक एक सरकारी दफ़्तर में नौकरी करता था। वह बड़े संकोची स्वभाव का था। कुछ दिनों बाद उसका विवाह हुआ, सुन्दर सुशील पत्नी मिली, लेकिन उसके स्वभाव में परिर्वतन नहीं आया। एक बात और हो गयी, उसकी पत्नी सुनन्दा भी उतने ही संकोची स्वभाव की निकली।

जिस दिन सुनन्दा पहली बार अपने पति के घर आयी, उस दिन पति-पत्नी के बीच रसोई बनाने की बात को लेकर संकोच पैदा हुआ। विनायक कुछ देर इधर-उधर ताकता रहा,, फिर बोला, "तुम्हारे लिए यह घर नया है। खाना बनाने में तुम्हें थोड़ी तकलीफ़ हो सकती है, आज हम क्यों न होटल से खाना मँगवा लें?"

सुनन्दा को इस बात का संकोच था कि पति के हाथ से रसोई की आवश्यक सामग्री कैसे मंगवाये, इसलिए संकोचभरे स्वर में ही बोली, आप अगर रसोई के लिए आवश्यक सामान लादें, तो मुझे खाना बनाने में कोई तकलीफ़ न होगी।"

संकोचशील पति-पत्नी के गृहस्थ जीवन की यात्रा पहले दिन इसप्रकार प्रारंभ हुई।

एक दिन दोनों शाम को नगर के प्रान्त भाग में बने शिवालय में गये। लौटते हुए अंधेरा हो गया। वे अभी रास्ते में ही थे कि उनकी मुलाक़ात एक बूढ़े से हुई। वह उन दोनों को देखकर बोला, "आपकी मेहरबानी होगी। मेरा सिर चकरा रहा है। मैं गिर पड़ूँगा। मुझे हाथ का सहारा दो। आप लोगों का बडा पुण्य होगा!"

विनायक ने बूढ़े को हाथ का सहारा दिया और धीरे-धीरे उसे ले चला। इतने में दो बुर्जुग उधर आ निकले। वे विनायक की तरफ क्रोधभरी निगाह डालकर बोले, "आप तो देखने में पढ़े-लिखे मालूम होते हैं! क्या बूढ़े पिता के साथ कहीं ऐसा ही व्यवहार किया जाता

सुधा जैन
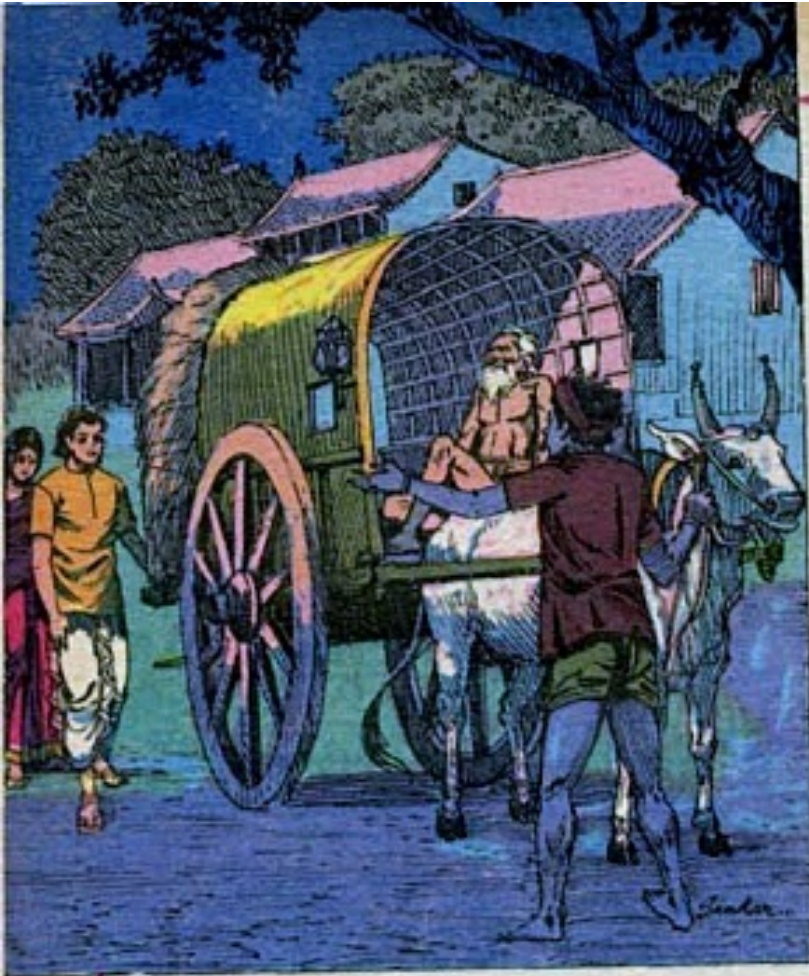
है ? कुछ तो तमीज़ होनी चाहिए !" कहकर उन्होंने उधर से जा रही एक घोड़ागाड़ी को रोका।

विनायक चुप बना रहा । उसे यह कहने में संकोच हुआ कि यह बूढ़ा मेरा पिता नहीं है । इस बीच गाड़ी वाले ने बूढ़े को गाड़ी पर चढ़ा लिया और बोला, "आप लोग इधर-उधर देखते क्या हैं ? जल्दी से गाड़ी पर सवार हो जाइए !"

विनायक और सुनन्दा चुपचाप गाड़ी पर चढ़ गये । घर पहुँच कर देखते क्या हैं कि बूढ़े का शरीर तेज़ बुखार से तवे की तरह तप रहा है । सुनन्दा ने जल्दी-जल्दी बूढ़े के लिए बिस्तर का इन्तज़ाम किया । दूध गरम करके पिलाया, इस बीच विनायक जाकर वैद्य को बुला लाया ।

चार दिन बीत गये । विनायक और सुनन्दा की सेवा-टहल से बूढ़ा पूरी तरह स्वस्थ हो गया लेकिन उसने विनायक का घर छोड़कर जाने का नाम तक नही लिया ।

इसके बाद चार दिन और बीत गये । नौवें दिन विनायक ने रुद्ध कंठ से सुनन्दा से कहा, "पता नहीं यह बूढ़ा हमारे घर से कब जायेगा?"

"उसी से हम क्यों न पूछ लें ?" सुनन्दा ने कहा ।

"कल भोजन के बाद पूछ लेना !" विनायक बोला ।

सुनन्दा को भी बूढ़े से यह बात पूछने में कुछ संकोच था, इसलिए वह भी चुप रह गयी ।

इसके बाद दो दिन और निकल गये । पति-पत्नी ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि बूढ़े से घर से जाने की बात कहना किसी तरह संभव नहीं है ।

बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद विनायक को एक उपाय सूझा । वह उसे कार्यान्वित करने के लिए तुरन्त उठा और बूढ़े के कमरे में जाकर बोला, " देखो बाबा, कल सुबह मैं और सुनन्दा इस शहर से कुछ दिन के लिए बाहर जा रहे हैं । सुनन्दा के मायके में एक शादी है, हमें वहाँ दो-तीन दिन लग जायेंगे !"

"बेफ़िक्र चले जाओ बेटा, मेरे खाने-पीने की कोई चिन्ता न करो । मैं खुद कोई न कोई इन्तज़ाम कर लूँगा ।" बूढ़ा बड़े इतमीनान से

बोला ।

बूढ़े के मुँह से यह जवाब सुनकर विनायक की कुछ समझ न आया। अपनी बात रखने के लिए वह सुनन्दा के साथ घर से निकल पड़ा और दो दिन शहर के कोने में बनी एक सराय में बिताकर लौटा ।

उन्होंने फिर बहुत सोच-विचार किया, पर बूढ़े से मुक्ति पाने का कोई उपाय कारगर न हुआ।

एक रात दोनों पति-पत्नी बूढ़े के बारे में बात करते रहे कि उससे कैसे पिंड छुड़ाया जाये ! तभी बूढ़ा अपने कमरे से उठकर आया और दृढ़ स्वर में बोला, "देखो, तुम लोग मेरे बारे में तरह-तरह की बात करके अपना दिमाग़ ख़राब मत करो । अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो ! मैं इस घर से जाने वाला नहीं हूँ। उस दिन मन्दिर से लौटते वक्त अगर तुम मुझे अपने घर न लाते तो मैं किसी के घर के चबूतरे पर आराम से मर गया होता । तुम लोगों ने मुझे बचाया है, इसलिए अब आगे मेरी देखभाल की जिम्मेदारी तुम लोगों की है। क्या तुम लोग मेरी इस बात से इनकार करोगे ? अगर तुम ऐसा करते हो तो मैं अभी तुम्हारे पिछवाड़े के कुएं में कूद कर जान दे दूँगा।" इतना कह कर बूढ़ा अपने कमरे में चला गया और निश्चिन्त हो सो गया ।

बूढ़े का दृढ़ निश्चय सुन कर विनायक और सुनन्दा सहम-से गये और सोचने लगे कि अब तो बूढ़े के मरने तक उससे मुक्ति की कोई

संभावना नहीं है ।

विनायक समझौते के स्वर में सुनन्दा से बोला, "हम तनख़्वाह में से हर महीने सौ रुपये बचाते हैं। अब ये सौ रुपये इस बूढ़े के ऊपर खर्च हो जायेंगे। चिन्ता की कोई बात नहीं है। अगर मेरे पिता जिन्दा होते तो इतना खर्च हमें करना ही पड़ता !"

सुनन्दा समझौते के स्वर में बोली, "हम दोनों का खाना बनता ही है। और दो मुट्ठी चावल, थोड़ी दाल-तरकारी का ज़्यादा खर्च पड़ेगा। खाना बनाना कोई मुश्किल काम तो है नहीं ।"

एक दिन विनायक के दफ़्तर चले जाने के बाद अचानक सुनन्दा की एक सखी नन्दिनी आ

खाना खाते हुए झींक उठा, "मैंने कितनी बार समझाया कि लौकी की सब्जी मुझे पसन्द नहीं है। फिर भी तुम मेरे लिए दूसरी कोई सब्जी नहीं बनातीं !"... इस तरह बूढ़ा खाना खाते हुए बड़बड़ाता रहा और फिर उठकर अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया।

नन्दिनी सारी बातें सुन रही थी। वह सुनन्दा से हंसकर बोली, "तुम्हारे ससुर तो बड़े क्रोधी स्वभाव के मालूम होते हैं। तुम्हारे पति भी तो कहीं ऐसे ही मिज़ाज के नहीं ?"

"नहीं, नन्दिनी, यह बूढ़ा मेरा ससुर नहीं है। एक राहगीर को लाकर हमने अपने सिर पर बोझ रख लिया है।" सुनन्दा ने आदि से अन्त तक सारी कहानी अपनी सहेली को कह सुनायी।

पहुँची। सुनन्दा की शादी और नन्दिनी के भाई की शादी एक ही दिन पड़ी थी, इसलिए नन्दिनी सुनन्दा की शादी में शामिल न हो सकी थी। अब वह फुरसत पाकर सुनन्दा से मिलने चली आयी थी।

सुनन्दा अपनी सहेली को देखकर बहुत खुश हुई। वे दोनों बैठकर अपने सुख-दुख की बातें कर रही थीं कि उसी समय बूढ़ा वहाँ आ पहुँचा और सुनन्दा को धमकाता हुआ बोला, "ये बेकार की बातें कब तक खत्म होंगी ? मुझे खाना दोगी या नहीं ? तुम को तो समय का कुछ ख्याल तक नहीं रहता।"

सुनन्दा चुपचाप उठ कर चली गयी और बूढ़े को खाना परोस कर लौट आयी। बूढ़ा

"दर असल तुम लोगों के संकोच ने तुम्हें इस मुसीबत के गड्ढे में गिरा दिया है !" नन्दिनी ने कुछ दुख और कुछ आश्चर्य से कहा।

"तुम्हीं बताओ, अब हम क्या करें ? ज़बर्दस्ती घर से निकल जाने को कहें तो यह कुएं में कूदकर मरने की धमकी देता है। कहीं ऐसी कोई घटना हो गयी तो हम तो कहीं मुँह दिखाने लायक़ नहीं रहेंगे।" सुनन्दा आँखों में आँसू भर कर बोली।

सुनन्दा की हालत देख नन्दिनी ठहाका मार कर हँस पड़ी और बोली, "सुनन्दा, तू तो बेवकूफ़ है। इतनी छोटी-सी बात भी नहीं जानती कि जो लोग इस तरह की धमकी देते हैं, वे मौत के नाम से ही थर-थर काँपते

हैं ? मैं अवश्य ही तुम्हें इस बूढ़े से छुटकारा दिलाऊँगी । बस, तुम मेरी सलाह मानो और जैसा मैं कहूँ, तुम चुपचाप करती जाओ !''

इसके बाद नन्दिनी ने सुनन्दा से थोड़ी-सी चीनी लेकर उसे बारीक पीस लिया । जब तीसरे पहर धूप का ताप थोड़ा कम हुआ तो बूढ़े की नींद खुली और वह नाश्ते के लिए रसोई घर की तरफ़ आया । रसोई में सुनन्दा के साथ नन्दिनी भी बैठी थी । उसने बूढ़े को न देखने का नाटक करते हुए सुनन्दा से कहा, ''देखो बहन, मरनेवाले बूढ़े को तुम लोगों ने बचाया, इसलिए उसकी देखभाल की जिम्मेदारी अब तुम्हारी ही है । लेकिन तुम कहती हो कि तुम्हारी ऐसी हैसियत नहीं है तो वह आराम से मर जाये, कुछ ऐसा उपाय करो ! यह तुम्हारा कर्त्तव्य है !''

''हाँ, तुम कहती तो ठीक हो !'' सुनन्दा ने नन्दिनी की हाँ में हाँ मिलायी ।

''तो सुनो ! मेरे पास एक ऐसा ज़हर है, जिसे तुम अगर बूढ़े के खाने या नाश्ते में मिलाकर दे दोगी तो एक हफ़्ते बाद अपने आप ही उसे प्राणों से छुटकारा मिल जायेगा और वह अपने पाप-पुण्यों के अनुसार स्वर्ग या नरक का भागी होगा । उसे ज़हर दिया गया है, यह बात बड़े से बड़े वैद्य भी नहीं समझ पायेंगे । बूढ़े को भी किसी तरह की पीड़ा नहीं होगी । समझीं ! तुम आज ही इस का प्रयोग करो ।'' यह कह कर नन्दिनी ने अपने हाथ की चीनी की पुड़िया सुनन्दा को थमा दी ।

रसोई घर के बाहर खड़े बूढ़े ने ओट से सारी बातें सुन लीं । वह घबराकर अपने कमरे में
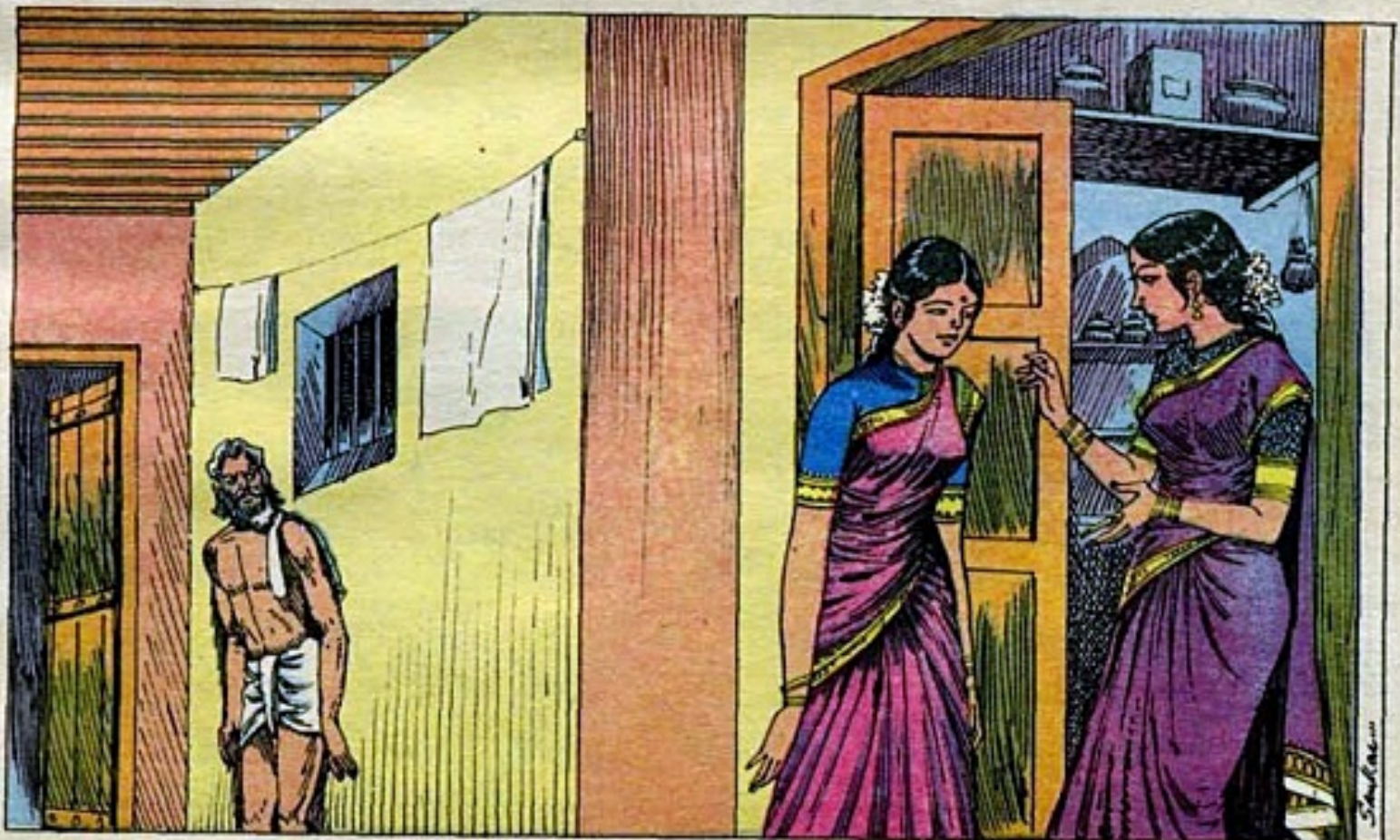
लौट आया । उसने अपनी पोटली बांधी और सुनन्दा को बुलाकर कहा, "बेटी, सुनो ! मैं यहाँ से अब जा रहा हूँ । तुम दुखी मत होओ ! मेरी यह इच्छा हो रही है कि अब इस बुढ़ापे में एक ही जगह न पड़ा रह कर तीर्थाटन करूँ । कल रात एक देवी ने मुझे स्वप्न में दर्शन देकर तीर्थाटन करने के लिए कहा । मैं सुबह ही यह बात तुम्हें बताना चाहता था, पर भूल गया । अच्छा, अब मैं चलता हूँ ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो, बाबा मेरे पति से कहे बग़ैर तुम कैसे जाओगे ? पर अगर जाने का पक्का ही है तो चलो, थोड़ा नाश्ता-पानी कर लो !" सुनन्दा ने सीखी-सिखायी बात दोहरा दी ।

नाश्ते की बात सुनकर बूढ़ा काँप उठा । घबराकर बोला, "नहीं, बेटी ! मुझे ज़रा भी भूख नहीं ! अब मैं क्षण भर भी इस घर में नहीं रुक सकता ।" यह कह कर बूढ़ा उसी वक्त अपनी लाठी और पोटली उठाकर चल पड़ा ।

उस दिन शाम को विनायक जब दफ़्तर से लौटा तो सुनन्दा ने उसे नन्दिनी से मिलाया और सारा समाचार सुनाकर गहरी साँस लेकर बोली, "नन्दिनी की सूझ के कारण हमें बूढ़े से छुटकारा मिल गया ।"

विनायक कुछ कहने ही जा रहा था कि नन्दिनी बीच में दखल देकर बोली, "सबसे पहले तो आप दोनों अपने हद से ज़्यादा संकोची स्वभाव से छुटकारा पा लीजिए ! मैं यह जानती हूँ कि उपकार की वृत्ति अवश्य होनी चाहिए । इस भावना के बिना मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है । लेकिन अपनी सामर्थ्य से अधिक उपकार करना मुसीबत का कारण बन जाता है ।"

"हमने यह बात अपने अनुभव से जान ली है । तुम्हारा कहना सही है । हमारे संकोची स्वभाव ने हमें मुसीबतों में डाल दिया है । तुमने हम को अच्छा सबक सिखाया है । क्यों, सुनन्दा, मेरी बात सही है न !" यह कहकर विनायक पहली बार खुल कर हँसा ।

सुनन्दा भी स्वीकृति में मुस्करायी ।

बरगद की बलि

प्राचीन काल की बात है। काशी पर ब्रह्मदत्त का राज्य था। बोधिसत्व ने ब्रह्मदत्त के पुत्र के रूप में जन्म लिया। उसका नामकरण हुआ और ब्रह्मदत्त कुमार नाम मिला। ब्रह्मदत्त कुमार ने तक्षशिला में सोलह वर्ष की उम्र पूरी होने से पहले ही वेद, वेदांग और उपनिषदों का अध्ययन कर लिया। शिक्षा पूरी होने पर वह काशी लौटा। उसके पिता ने बड़ी धूमधाम से उसका युवराज पद पर अभिषेक किया।

उस युग में काशी राज्य की प्रजा अनेक अन्धविश्वासों से ग्रस्त थी। उस राज्य में अनेक देवी-देवताओं की पूजा का चलन था। कई मेले लगते थे। ऐसे अवसरों पर भेड़-बकरी और मुर्गों की बलि दी जाती थी और उनका रक्त देवी को अर्पित किया जाता था। ब्रह्मदत्त कुमार इन सब मिथ्या कर्मकांडों और अनाचारों को देख कर मन ही मन दुखी हो जाया करता था। वह सोचा करता था, "जब मैं राजा बनूँगा तो रक्त की एक बूंद गिराये बिना इन दुराचारों का अंत कर डालूँगा।"

काशी नगरी के बाहर बरगद का एक पेड़ था। प्रजा की यह मान्यता थी कि उस पेड़ पर एक देवी निवास करती है। जो लोग मनौती मानते हैं, उन्हें वह देवी संतान प्रदान करती है तथा उन की अन्य मनोकामनाओं को भी पूरा करती है।

एक दिन ब्रह्मदत्त कुमार अपने रथ पर सवार होकर शहर के बाहर स्थित बरगद के उस पेड़ के पास पहुँचा। उस समय अनेक स्त्री-पुरुष भक्तिपूर्वक उस वृक्ष की परिक्रमा कर रहे थे। युवराज ने वृक्ष से कुछ दूर पर अपना रथ छोड़ दिया और पुष्पों से उस वृक्ष की अर्चना करके तीन बार परिक्रमा की। इसके बाद वह रथ पर सवार होकर अपने राजभवन लौट गया। उस दिन से कुमार अक्सर उस वृक्ष के पास जाता और अंधविश्वास रखने वाले साधारण लोगों की

भांति वह भी वृक्ष की पूजा करके उसकी परिक्रमा करता ।

कुछ समय बाद राजा ब्रह्मदत्त का देहान्त होगया और युवराज ब्रह्मदत्त कुमार काशी का राजा बना ।

राज्याभिषेक के तुरन्त बाद उसने राज सभा बुलायी और उस बैठक में यह वक्तव्य दिया, "सभासदो ! आप यह नहीं जानते कि मैं राजा कैसे बन गया हूँ ? पर आप लोग यह अवश्य ही जानते होंगे कि जब मैं राजा नहीं था, तो नगर के बाहर स्थित उस पवित्र बरगद के पेड़ की पूजा के लिए प्रायः जाया करता था। मैंने वृक्ष की देवी से उस समय अपने दिल में यह मनौती की थी कि अगर वह मुझे शीघ्र ही राजा बना दे तो मैं उस बरगद के वृक्ष को एक हज़ार प्राणियों की बलि दूँगा। मेरी मनौती पूरी हो गयी। अब मैं अपने वचन का पालन करना चाहता हूँ ।"

अपने नये राजा की बात सुनकर सभी सभासद बहुत प्रसन्न हुए। मंत्रियों ने राजा से कहा, "महाराज ! आप हमें बतायें, किन पशुओं से बरगद की बलि दी जायेगी, हम अभी सारा प्रबंध करते हैं ।"

"मैंने पशुओं की बलि देने की मनौती नहीं की थी, बल्कि देवी-देवताओं को पशुओं की बलि चढ़ानेवाले मनुष्यों की बलि की मनौती मानी थी। इसलिए, आप लोग ऐसे एक हज़ार मनुष्यों को ले आइये जो वृक्ष की पशुओं की बलि चढ़ाते हैं ! मैं अवश्य ही अपनी मनौती पूरी करूँगा। साथ ही, सारे राज्य में इस बात का ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि आज से जो भी पशुओं की बलि देगा, उसे बरगद की बलि चढ़ाया जायेगा ।"

सारे सभासद राजा की घोषणा सुन कर एक दम सन्न रह गये। वे लोग स्वयं भी वृक्ष की बलि चढ़ाने में विश्वास करते थे, क्या बोलते ? सब लोग चुप रह गये ।

सारे राज्य में ढिंढोरा पिटवाया गया। उस दिन से काशी राज्य में जादू की तरह पशुओं की बलि बंद हो गयी ।
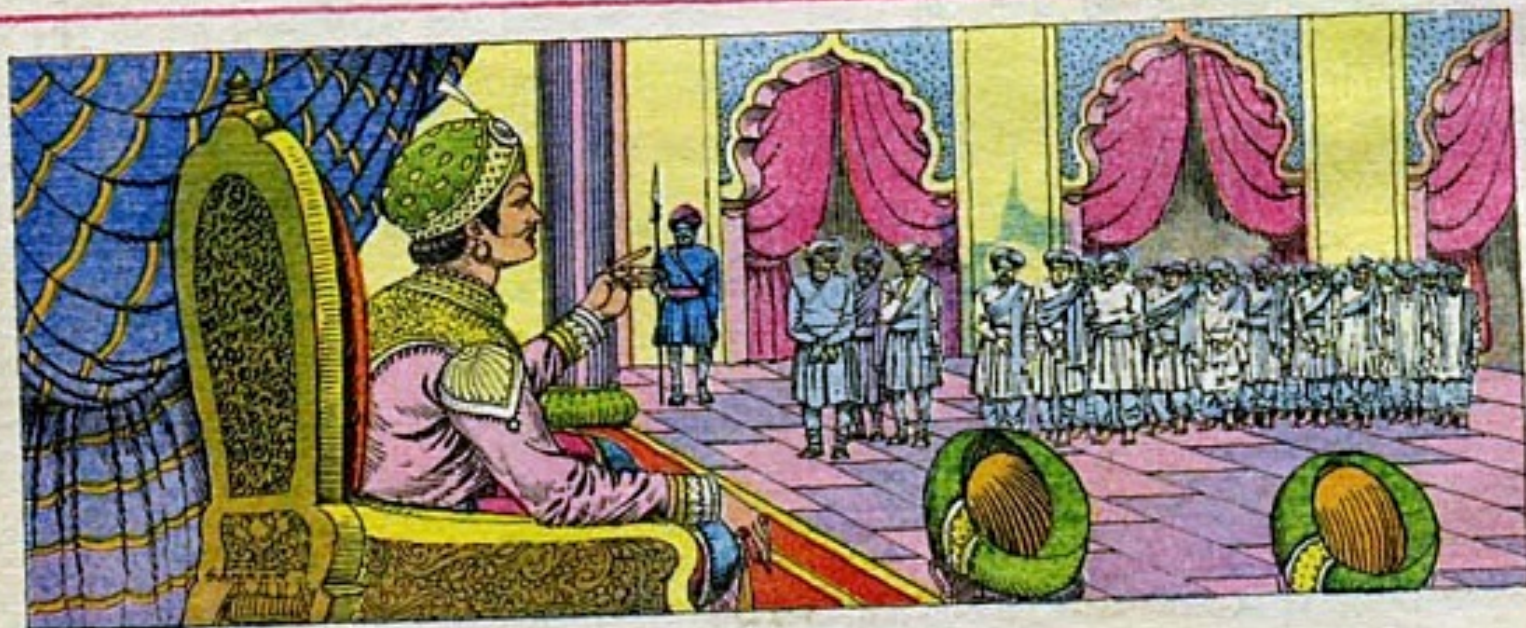
गंगा-१

हमारी नदियाँ

एक बार नारद मुनि भूलोक से देवलोक के लिए जा रहे थे। पूर्णिमा की रात थी। हिमालय की पर्वतमालाएं शुभ्र चांदनी में नहायी हुई थीं। नारद आनन्दपूर्वक वीणा-वादन करते हुए जा रहे थे।

एक घाटी के समीप नारद ने देखा कि अत्यन्त सुन्दर कुछ नर-नारी वहाँ संचरण कर रहे हैं। नारद मुनि के मन में उनका परिचय जानने की इच्छा हुई। वे उनके निकट आये।

जब नारद उनके बहुत निकट आ गये तो उन्हें एक नयी बात की जानकारी मिली। उन सब एकत्रित व्यक्तियों में हर एक व्यक्ति विकलांग था। किसी के आँख न थी तो किसी के कान न था। किसी के एक हाथ नहीं था तो किसी के एक पैर नहीं था।

नारद को बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने पूछा, "आप लोग कौन हैं ?" वे सब नारद के प्रश्न का उत्तर देने में संकोच करने लगे। कुछ ठहर कर उन्होंने कहा, "हम राग एवं स्वरों के प्राण रूप गन्धर्व हैं । गायक और गायिका जब स्वर-समेत रागों का आलाप लेते हैं तो उनके त्रुटिपूर्ण गायन के दुष्परिणाम हम पर प्रहार करते हैं । इसी कारण हम एक-एक अंग से वंचित हो गये हैं ।"

गन्धर्वों के इस उत्तर को सुनकर गायक नारद को बहुत दुख हुआ । उन्होंने कुतूहलवश उनसे और भी कई प्रश्न पूछे । तब उन लोगों ने उत्तर दिया, "हे देवर्षि, अगर पूर्ण गायक शिव का संगीत हम सुन पायें तो हमें हमारे खोये हुए अंग प्राप्त हो सकते हैं । हमारी विकलांगता दूर हो सकती है ।"

नारद उसी समय कैलास गये और शिव को सारा वृत्तान्त सुनाया । करुणानिधान परमशिव ने गाने की स्वीकृति दे दी । लेकिन यह शर्त भी रखी कि उनका गीत सुनने के लिए एक पूर्ण श्रोता अवश्य उपस्थित हो । पूर्ण श्रोता तो दो ही थे-ब्रह्मा और विष्णु । नारद ब्रह्मा के पास पहुँचे और उनसे शिव का गायन सुनने का आग्रह किया ।

शिव का गायन सुनने के लिए ब्रह्मा ने बड़ी प्रसन्नता से अपनी स्वीकृति दी। नारद की इच्छा थी कि दूसरे पूर्ण श्रोता विष्णु भी शिव का संगीत सुनने के लिए चलें। विष्णु ने जब शिव के गायन का समाचार सुना तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने भी अपनी स्वीकृति दी।

नारद ब्रह्मा, विष्णु और समस्त गन्धर्वों के साथ शिव के सामने उपस्थित हुए। शिव ने काफ़ी देर तक मौन धारण किया, ध्यान किया और फिर धीरे से आलाप लेना प्रारंभ किया। उस अद्भुत संगीत को सुनकर सारा समुदाय तन्मय-तल्लीन होगया।

शिव के संगीत पर मुग्ध होकर गन्धर्व नृत्य करने लगे। उनकी विकलांगता जाती रही। उन्होंने अत्यन्त आनन्दित होकर कृतज्ञतापूर्वक शिव को प्रणाम किया।

शिव के संगीत की अद्भुत लहरियाँ सारे वातावरण में छा गयीं। प्रकृति शोभायमान हो उठी। पेड़-पौधे रंग-बिरंगे फूलों से भर उठे। मलयानिल की सुगन्ध चारों तरफ़ व्याप्त हो गयी। वहाँ के वातावरण ने पृथ्वी तथा स्वर्ग को नयी शोभा प्रदान की।

उस समय वहाँ एक चमत्कार घटित हुआ। शिव के विराट संगीत में तन्मय विष्णु के शरीर की एक पर्त गलकर बहने लगी। उस आश्चर्य-घटना को केवल ब्रह्मा ने देखा।

ब्रह्मा ने उसी क्षण उस जलधारा को अपने कमण्डलु में भर लिया। वही जल धारा गंगानदी का उद्गम है। तन्मय विष्णु के शरीर से प्रवाहित होने के कारण गंगानदी अत्यन्त पवित्र मानी जाती है।

ज्ञानोदय

चित्रांगदा नगरी के राजा का नाम कीर्तिसेन था। वे युवक ही थे कि उनके मन में यह चिंता घर कर गयी कि उन्हें थोड़े समय बाद मृत्यु का शिकार होना पड़ेगा। राजा की चिंता देखकर मंत्री धर्म शर्मा ने उन्हें सलाह दी कि वनवासी तपस्वी ऋषि ज्ञानानन्द से वे उपदेश ग्रहण करें।

राजा कीर्तिसेन ने ज्ञानानन्द को सादर निमंत्रित किया। उनका स्वागत कर अपनी चिन्ता का कारण बताया और कहा, "मुनिवर, क्या आप मुझे कोई ऐसा उपाय बता सकते हैं कि मैं मृत्यु से बच सकूँ ?"

ज्ञानानन्द ने मुस्कराकर कहा, "महाराज ! अभी आप युवक हैं। आपको यह भ्रम है कि आप सदा युवावस्था में ही बने रहेंगे। इसीलिए आप मृत्यु से डरते हैं। लेकिन कुछ काल बीतने पर आप वृद्ध हो जायेंगे। आपकी दृष्टि मंद पड़ जायेगी। श्रवण-शक्ति घट जायेगी। दाँत गिर जायेंगे। शरीर शिथिल हो जायेगा। कमर झुक जायेगी। यह प्रकृति का नियम है। ऐसा होगा ही। आपके भीतर तब मृत्यु से बचने की कामना शेष न रहेगी। इसलिए कभी न कभी अवश्य आनेवाली मृत्यु को लेकर आप चिंता न करें। यह विवेकपूर्ण नहीं।"

राजा कीर्तिसेन ने मुनि ज्ञानानन्द को प्रणाम कर कहा, "महात्मन् ! आपने मेरे हृदय में ज्ञान का उदय किया है। मुझे जो चिंता खाये जा रही थी, उससे मुझे मुक्ति मिल गयी।" यह कहकर राजा ने आदरपूर्वक मुनि को विदा दी।

अधिकारी कौन

मैथिलीपुर के राजा चंद्रचूड़ की राजसभा में विद्वानों का बड़ा आदर था । गौरांग और गंभीर नाम के दो कवि उनके सभासद भी थे । गौरांग ने अनेक उत्तम काव्यों की रचना की थी और महाकवि के रूप में यश प्राप्त किया था । गंभीर अभी नवयुवक ही थे । फिर भी उनकी रसज्ञता अद्भुत थी । वे उदार भी थे और विद्वान भी । उनके काव्य लोकप्रिय होने लगे थे और वे लोगों की प्रशंसा के पात्र थे ।

साहित्यप्रेमी राजा चंद्रचूड़ के दर्शनों के लिए राजधानी में अनेक कवि-पंडितों का तांता लगा रहता था । राजा को एक ऐसे विद्वान की आवश्यकता अनुभव हुई जो राजधानी में आनेवाले कवि एवं पंडितों की योग्यता का सही परीक्षण कर सके और योग्य व्यक्ति को उसका समुचित स्थान दिला सके । राजा को एक सलाहकार की आवश्यकता थी ।

राजा चंद्रचूड़ ने यह बात मंत्री मिहिरशर्मा को बतायी । राजा की बात सुनकर मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ । वह बोला, ''महाराज, राजसभा में गौरांग जैसे महाकवि के होते हुए अन्य किसी कवि अथवा विद्वान को खोजने की क्या आवश्यकता है ? आप उन्हें यह विशिष्ट पद प्रदान कीजिए । आवश्यकता पड़ने पर वे आपको उचित परामर्श भी देंगे ।''

मंत्री का उत्तर सुनकर राजा ने सिर हिलाया और मौन बने रहे । इस घटना के एक सप्ताह बाद ललाट देश से भूषण नाम के एक कवि का आगमन हुआ । उसने राजा चंद्रचूड़ के दर्शन कर कहा, ''महाराज, मैं अपनी प्रथम कृति आपको समर्पित करने की इच्छा से बड़ी दूर की यात्रा करके आया हूँ ।''

राजा ने भूषण के हाथ से वह कृति ले ली और राजकर्मचारियों को बुलाकर कवि के खानपान और आवास की उचित व्यवस्था का आदेश दिया । इसके बाद राजा ने महाकवि

गौरांग को बुलाकर उनके हाथ में भूषण की काव्यकृति रखकर कहा, "कवि गौरांग, आप भूषण कवि की यह रचना पढ़कर इसके बारे में अपने विचार बताइये !"

दूसरे दिन गौरांग ने राजा के दर्शन कर कहा, "महाराज, मैंने यह काव्य-कृति पढ़ी। भूषण कवि की यह प्रथम रचना है। मैंने इसका सूक्ष्म परिशीलन किया, लेकिन मुझे इस कृति में कोई दोष नज़र नहीं आया।"

गौरांग ने इस रचना को नकारात्मक स्वीकृति दी थी। गौरांग के चले जाने के बाद राजा ने कवि गंभीर को बुलाया और भूषण की काव्य-कृति देकर कहा, "कवि गंभीर, भूषण कवि की इस कृति को पढ़कर अपना अभिमत दीजिए !"

दो दिन बाद कवि गंभीर राजा से मिले और बोले, "महाराज, इस काव्य के रचनाकार नये कवि प्रतीत होते हैं। फिर भी इस काव्य में कुछ ऐसे प्रसंग हैं, जो रस की दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।"

गंभीर कवि के चले जाने के बाद राजा ने मंत्री मिहिरशर्मा से कहा, "किसी की विद्या का निर्णय करने के लिए मुझे गंभीर कवि विशेष अधिकारी प्रतीत होते हैं। मैं अपने परामर्शदाता के रूप में उनकी नियुक्ति करता हूँ। आप उचित प्रबंध करें !"

मंत्री मिहिरशर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बोले, "महाराज, इतना महत्वपूर्ण पद आप नयी आयुवाले कवि गंभीर को देना चाहते हैं? क्या इस समाचार से महाकवि गौरांग को दुख नहीं

पहुँचेगा ? फिर भी, आपने यह निर्णय लिया है तो इसके पीछे अवश्य ही कोई कारण होगा।''

राजा चंद्रचूड़ क्षण भर रुक कर बोले, ''कवि भूषण की काव्यकृति पढ़कर गौरांग तथा गंभीर ने अपने जो विचार प्रकट किये, उन्हें तो आप भी सुन चुके हैं !''

मंत्री ने स्वीकार में सिर हिलाया।

राजा फिर बोले, ''इन दोनों कवियों ने कविभूषण की काव्यकृति के बारे में अपने जो विचार प्रकट किये, उन्हें सुनकर मैं कवि गंभीर को ही इस पद के लिए अधिक अधिकारी व्यक्ति मानता हूँ। राजधानी में अनेक कवि-कलाकारों का आगमन होता है। उनका उचित ढंग से स्वागत हो, उनकी रचनाओं पर पुरस्कार प्रदान किये जायें और उनकी कलाकृतियों को सम्मान देकर उन्हें प्रोत्साहित किया जाये, इसके लिए केवल पांडित्य की नहीं, रसज्ञता की भी आवश्यकता है। कवि गौरांग के दृष्टिकोण में दोष का निरूपण करने की प्रकृति अधिक है, जबकि कवि गंभीर गुणापेक्षी प्रतीत होते हैं।'' मंत्री ने स्वीकार किया।

इसके बाद राजा चंद्रचूड ने फिर कहा, ''यदि हम विद्या-निर्णय के अधिकारी का पद गौरांग को देते हैं तो वे राजाश्रय प्राप्त करने की इच्छा से आनेवाले कवियों की त्रुटियों को दिखाने का प्रयास ही विशेष रूप से करेंगे। पर कवि गंभीर ठीक इसके विपरीत उनके गुण-पक्ष के उद्घाटन में विशेष आग्रह दिखायेंगे। इस पद पर जिस व्यक्ति की नियुक्ति हो, उससे अधिक से अधिक कवि-कलाकार लाभान्वित हों, यही मेरा उद्देश्य है और इस पद के लिए गंभीर कवि ही अधिकारी प्रमाणित होते हैं।''

राजा के विचार सुनने के बाद मंत्री मिहिरशर्मा के मन में कोई सन्देह नहीं रहा और उन्होंने प्रशंसा के भाव से राजा का निर्णय स्वीकार किया।

कवि गंभीर को यह विशिष्ट पद प्रदान किया गया। गंभीर ने अनेक कवि और पंडितों को राजाश्रय दिलाया और स्वयं एक अत्यन्त विवेकशील व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

आत्म स्तुति

हेमपुर गाँव में नागेंद्र और वरलक्ष्मी एक दम्पति रहते थे। इनका परिवार गाँव के सम्पन्न परिवारों में एक माना जाता था। गोविन्द इनका इकलौता पुत्र था। वह पढ़ने-लिखने में तेज़ था और अक्लमंद भी था, लेकिन घर के काम-काज में कभी हाथ नहीं बँटाता था और दोस्तों के साथ हमेशा मटरगश्ती किया करता था। माता-पिता डाँटते, तो भी वह परवाह नहीं करता था।

एक बार गोविन्द का मामा सुरेंद्र अपनी बहन को देखने के लिए हेमपुर आया। गोविन्द के रंग-ढंग देखकर वह बहुत दुखी हुआ और उसने इसकी सारी ज़िम्मेदारी बहन-बहनोई पर डाल कर उनसे झगड़ा खड़ा कर दिया।

"हम कर ही क्या सकते हैं? लाख समझाने पर भी वह हमारी बात नहीं मानता।" नागेंद्र और वरलक्ष्मी एक स्वर में बोले।

सुरेंद्र ने गोविन्द को पास बुलाकर उसे समझाया, "देखो बेटा! तुम्हारे सामने ही तुम्हारे मां-बाप तुम्हारी निन्दा करते हैं। तुम्हारे दोस्त तुम्हारे पीछे तुम्हारा मज़ाक उड़ाते हैं। जो कामकाज में नहीं लगता, उसकी कोई इज्जत नहीं करता।"

"मामाजी! मेरे दोस्त ऐसे नहीं हैं!" गोविन्द ने तैश में आकर कहा।

"अगर ऐसा है तो तुम एक काम करो। तुम उनके सामने अपनी खूब बढ़-चढ़कर तारीफ़ करो, खूब बड़प्पन हाँको और अपनी सामर्थ्य का बख़ान करो, तब उनकी असलियत तुम्हारे सामने आजायेगी।" मामा ने सुझाव दिया।

गोविन्द ने ऐसा ही किया। शुरू में तो उसके दोस्तों ने सोचा कि गोविन्द शौक में आकर इस तरह आत्म स्तुति कर रहा है, लेकिन जब यह सिल सिला चलता ही रहा तो वे चिढ़ गये। उन्हें गोविन्द का इस तरह अपनी तारीफ़ आप करना अच्छा न लगा। एक दिन उन्होंने उसे

धमका ही दिया, "अबे यार ! तुझे हम बचपन से जानते हैं कि तू कितने पानी में है। तेरी असलियत हमसे छुपी नहीं है। फिर भी तू हमारे सामने इतनी हेकड़ी दिखाता है।"

लेकिन गोविन्द अपनी आदत से मजबूर हो चुका था। वह बोला, "तुम नहीं जानते, मेरे परिवार में लोग मेरी बात का कितना आदर करते हैं। खेती बाड़ी हो या और कोई काम, सबमें मेरी सलाह ली जाती है। तुम लोग मेरे माता-पिता और मेरे मामाजी से पूछ लो !"

दोस्तों ने सोचा कि गोविन्द अपनी तारीफ़ आप करने की आदत छोड़ने से रहा, क्यों न हम ही उससे मिलना-जुलना बंद कर दें ! एक महीने के अन्दर हालत यहाँ तक आ पहुँची कि गोविन्द का अपना दोस्त कहलानेवाला एक भी व्यक्ति न रहा। सब उससे दूर रहने लगे।

गोविन्द को बड़ी निराशा हुई। उसने सुरेंद्र से कहा, "मामाजी ! आपका कहना सच है। मेरे दोस्त सचमुच ही बड़े ईर्ष्यालु हैं, वे मेरे बड़प्पन को सहन नहीं कर पाते। मैंने आज तक उनके साथ अपना वक्त बरबाद किया है ! अब बताइये, मुझे क्या करना है !"

"तुम अपने माता-पिता का कहना मानो और उनके अनुसार चलकर उन्हें खुश रखो !" मामा ने सलाह दी।

"माता-पिता मेरे दोस्तों जैसे नहीं निकलेंगे, इस बात का क्या भरोसा है ?" गोविन्द ने शंका प्रकट की।

"सुनो बेटा, अगर तुम अपनी झूठी तारीफ़ भी करोगे तो वे सुन लेंगे। तुमसे वे ईर्ष्या कभी नहीं करेंगे।" मामा ने समझाया।

बहन-बहनोई को सुरेंद्र ने यह समझा दिया कि गोविन्द कितनी भी अपनी तारीफ़ करे, तुम लोग शांति से सुनकर उसकी हाँ में हाँ मिला देना।

नागेंद्र और वरलक्ष्मी ने सुरेंद्र की सलाह यह सोचकर मान ली कि किसी तरह उनका बेटा सुधर जाये। और उन्हें चाहिए भी क्या था ?

उस दिन के बाद गोविन्द अपने मां-बाप के सामने ही अपनी तारीफ़ के पुल बाँधने लगा। वे लोग बड़ी सहनशीलता और प्रसन्नता से गोविन्द की बातें सुनते, इसलिए गोविन्द के मन

में भी अपने माता-पिता के प्रति प्रेम और आदर बढ़ गया। वह उनका कहना मानता और जैसा वे चाहते, घर के काम-काज तथा खेती बाड़ी के कामों में मदद पहुँचाता।

अपने भानजे में यह परिवर्तन देख कर सुरेंद्र बहुत खुश हुआ। जब वह अपने गाँव वापस जाने लगा तो उसने सुरेंद्र को बुलाकर समझाया, "बेटा! कोई कितना भी आत्मीय क्यों न हो, बराबर अपनी तारीफ़ करते रहने से सब खीज उठते हैं। इसलिए तुम एक काम करो, जब भी तुम्हें फुरसत हो, बड़े-बड़े महाकाव्य और ग्रंथ पढ़ना प्रारंभ कर दो। उनमें तुम्हें 'स्तुति' सम्बन्धी सारे विवरण पढ़ने को मिलेंगे, जैसे मंत्री राजा की स्तुति कैसे करता है, भक्त भगवान की। पत्नी अपने पति को किन स्तुति-वाक्यों से प्रसन्न करती है, पुत्र अपने माता-पिता को। तुम इन सारे प्रशंसा-वाक्यों को कंठस्थ कर लेना!"

गोविन्द ने अपने मामा की सलाह के अनुसार महान ग्रंथों का पठन-पाठन आरंभ कर दिया। अपने पुत्र के अन्दर यह परिवर्तन देख नागेंद्र और वरलक्ष्मी भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। पर बात यहीं तक सीमित न रही। गोविन्द आत्मस्तुति तो करता ही, निरर्थक रटे-रटाये वाक्यों से माता-पिता की स्तुति भी करता। उनका जी ऊबने लगा। तंग आकर वे गोविन्द का ध्यान बँटाने की कोशिश करते, "बेटा! थोड़ी देर इधर-उधर टहला करो, इससे शरीर सदा स्वस्थ रहता है।"
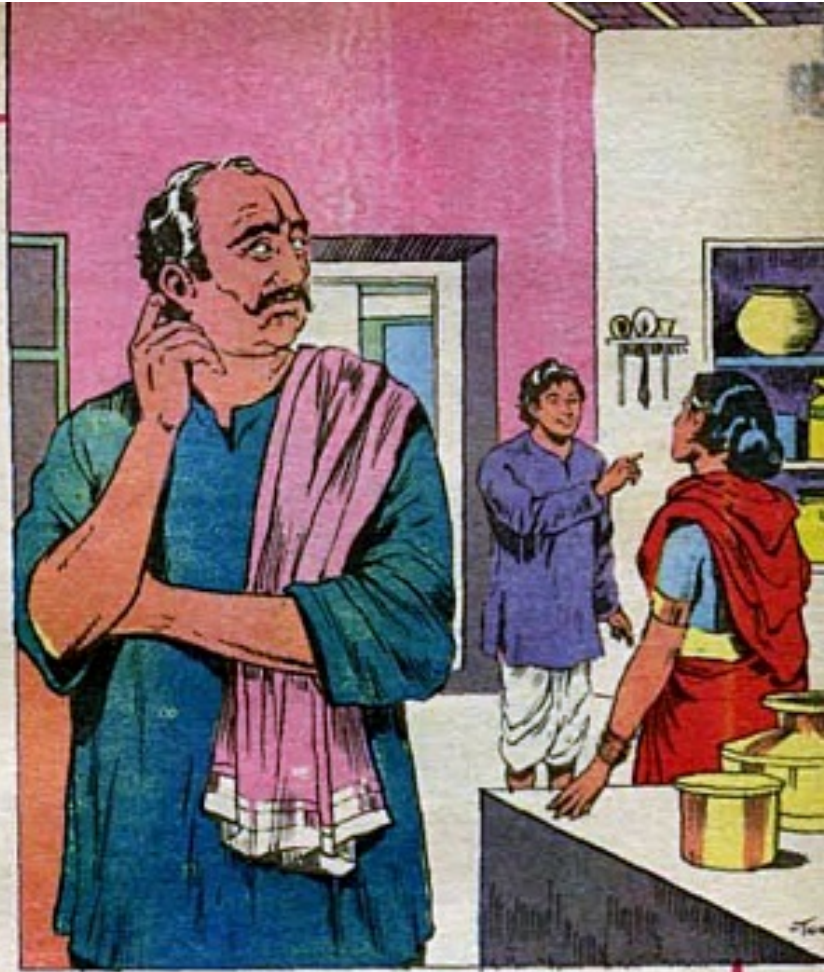
एक दिन गोविन्द की माँ उसके पिता से बोली, "सुनो जी! गोविन्द की झूठ मूठ की तारीफ़ से मैं तंग आगयी हूँ। उसकी यह आदत छुड़ाने के लिए कोई उपाय कीजिए!"

"अब हमारे पास तो कोई उपाय नहीं है। क्यों न हम इसकी शादी कर दें? तब सारी झंझट बहू के सिर पर आजायेगी। पत्नी होने के नाते वह सहन कर लेगी।" नागेंद्र ने कहा।

अब वे गोविन्द की शादी की तैयारी करने लगे। पर गोविन्द अपने स्वभाव के कारण अपयश का भागी हो चुका था। उसके साथ कोई भी अपनी लड़की ब्याहने को तैयार न हुआ।

उन्हीं दिनों सुरेंद्र फिर अपनी बहन वरलक्ष्मी को देखने आया। गोविन्द की शादी का प्रसंग
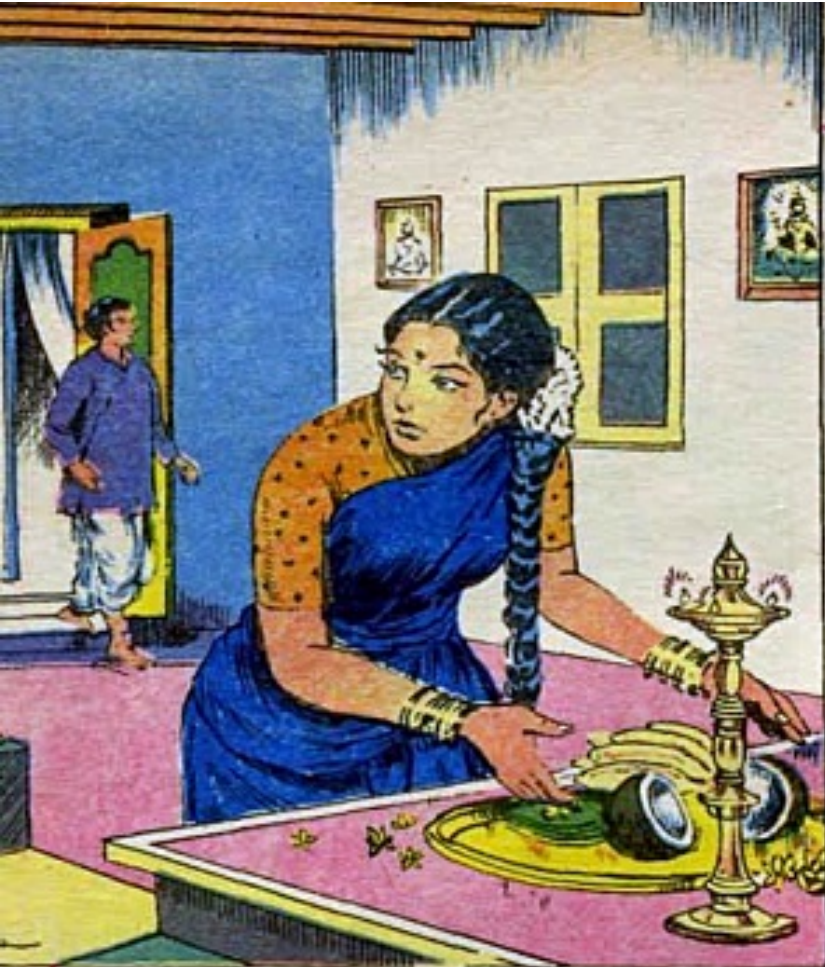
आने पर वह बोला, "मेरे गाँव के ही एक मेरे मित्र हैं। उनकी एक सुशील कन्या है। मैं उनसे बात चलाता हूँ। तुम चिन्ता मत करो !"

गोविन्द के माँ-बाप ने उस कन्या के बारे में पहले ही सुन रखा था। वह स्वभाव से बड़ी अच्छी लड़की थी, लेकिन नास्तिक थी। वह ईश्वर की पूजा-अर्चना, जप-तप, उपवास आदि कर्मकांडों में तनिक भी विश्वास न करती थी। पर जब गोविन्द को कोई भी अपनी लड़की देने को तैयार न हुआ तो नागेंद्र और वरलक्ष्मी ने ऐसी नास्तिक लड़की के रिश्ते को भी स्वीकार' कर लिया।

गोविन्द की बहू बनकर राधा ससुराल आगयी। अब सारी विपदा राधा के सिर आ पड़ी। जब भी वह सामने होती, गोविन्द अपनी तारीफ़ के पुल बांधने लगता। नागेंद्र और वरलक्ष्मी को तो बेटे की उबा देनेवाली बातों से छुट्टी मिल गयी पर राधा पर सारा संकट आ गया। इस कारण नागेंद्र और वरलक्ष्मी बहू के प्रति अधिक सहानुभूति रखने लगे।

राधा को ससुराल में सब तरह का सुख प्राप्त था, पर अपने पति के स्वभाव से वह ऊब गयी। उससे बचने के लिए वह व्यस्त रहने लगी और प्रतिदिन पूजा-अर्चना-पाठ का बहाना करने लगी। अब गोविन्द को अपनी पत्नी के सामने कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिलता था। राधा को अपने पति की उबा देनेवाली निकटता से मुक्ति मिली तो वह सचमुच ही भगवान की भक्त बन गयी। अब वह आस्तिक थी और बड़ी लगन से पूजा-पाठ करती थी। नागेंद्र और वरलक्ष्मी को बहू में यह परिवर्तन देख बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने यह ख़बर राधा के पिता को दी।

राधा के पिता मनहरलाल ने जब यह समाचार सुना तो एकाएक उसे विश्वास नहीं हुआ और वह अपनी बेटी को देखने के लिए उसकी ससुराल आया। राधा ने अपने पिता को सारा हाल कह सुनाया। 'मेरी बेटी दामाद की आत्मस्तुति के कारण नास्तिक से आस्तिक बन गयी है' यह बात मनहरलाल को बड़ी अद्भुत प्रतीत हुई। उसने गोविन्द से एकान्त में बात करने का विचार किया।

एक दिन वह टहलने के बहाने गोविन्द को गाँव से बाहर ले गया और बोला, "बेटा गोविन्द ! तुम्हारे मामा तुम्हें दोस्तों की संगत से छुटकारा दिलाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने तुम्हारे अन्दर आत्मस्तुति की गलत आदत डाल दी। अब वह आदत तुम्हारे अन्दर इतना घर कर चुकी है कि तुम्हारे परिवार वाले भी तुम्हारी इस आदत से तंग आ गये हैं। सब तुम्हारे साथ अपना समय बिताने से डरते हैं। तुम अब अपनी इस आदत को तिलांजलि दे दो।"

"मैं क्या करूँ, मैं अपनी इस आदत को छोड़ नहीं पाता ? आप ही मुझे कोई उपाय बता दीजिए !" गोविन्द ने कहा।

मनहरलाल ने कुछ देर विचार कर कहा, "अच्छा, तुम एक काम करो ! आज तक तुम या तो आत्मस्तुति करते थे या ग्रन्थों के रटे हुए स्तुति-वाक्यों को माता-पिता आदि के सामने दोहराया करते थे। अब तुम जब भी किसी से मिलो तो उसकी सहज प्रशंसा करना शुरू कर दो ! देखो, इस नयी बात का क्या नतीजा निकलता है !" यह सलाह देकर मनहरलाल अपने गाँव चला गया।

गोविन्द ने अपने ससुर की सलाह भी मान ली और सामनेवाले की तारीफ़ करना आरंभ कर दिया। इससे उसके मित्रों की संख्या बढ़ गयी। लोग उसकी बातों में रुचि लेने लगे। लेकिन गोविन्द के मन में अपनी इस नयी आदत से बड़ी विरक्ति हुई। आत्म स्तुति छोड़कर अब वह परस्तुति में लग गया था। फ़ायदा क्या हुआ ? उसके अन्दर दोनों की ही निरर्थकता का बोध हुआ और उसने अधिक बात करना बन्द कर दिया। अब वह अपना समय पठन-पाठन और घर के काम काज में लगाता।

बुद्धिमत्ता में कर्मठता आ मिली। गोविन्द शीघ्र ही एक कुशल और सफल व्यक्ति बन गया। वह समय पड़ने पर सबका सहयोग करता। उसे घर और बाहर सबका स्नेह और सद्भाव प्राप्त होने लगा। अब गोविन्द उस गाँव के एक विशेष व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

अनुकूल गृहिणी

मनीपुर गाँव में एक किसान रहता था। नाम था सुखीराम। उसकी पत्नी सुशीला अपने नाम के अनुरूप ही बड़ी सुशील नारी थी। उसका अपने पति के प्रति अपार आदर-भाव था। सुखीराम जो भी काम करता, सुशीला को वह अच्छा ही लगता था। किसान के पास ज़मीन-जायदाद भी थी और दो गायें भी थीं। दूध-दही-घी किसी बात की कमी न थी। दोनों के दिन आराम से कट जाते थे। सुशीला ने दूध-दही बेचकर सौ रुपये जमा कर लिये थे।

एक दिन सुशीला ने अपने पति को सलाह दी, "एक गाय के दूध-दही से हमारा काम चल जाता है। दूसरी गाय को रखना थोड़ा भारी ही पड़ता है। इसलिए तुम एक गाय को हाट में ले जाओ और बेच दो। हमारे पास जो सौ रुपये हैं, वे तीज-त्यौहार पर हमारे काम आयेंगे।"

सुखीराम ने अपनी पत्नी की बात मान ली और एक दिन गाय को लेकर हाट में पहुँचा। उसने बड़ी कोशिश की, लेकिन गाय नहीं बिकी। किसान ने सोचा 'गाय नहीं बिकी तो क्या हुआ? अपनी गाय अपने घर रह जायेगी'— और वह गाय को हाँकता हुआ अपने गाँव की तरफ़ चल पड़ा।

रास्ते में उसकी भेंट एक घुड़सवार से हो गयी। सुखीराम ने उसके हाथ अपनी गाय बेच दी और बदले में उसका घोड़ा ले लिया। फिर वह घोड़े पर बैठ अपने गाँव की ओर चल दिया। रास्ते में फिर उसे एक आदमी मिला। उसके पास एक बकरी थी। दोनों में बात तय हुई। किसान ने उसे घोड़ा सौंपकर बकरी ले ली।

अभी सुखीराम कुछ ही दूर आगे बढ़ा था कि एक आदमी एक बतख़ लिये उसके सामने आ गया। किसान ने उसे बकरी दी और बदले में बतख ले ली।

कुछ दूर आगे जाने पर एक आदमी मुर्ग़ा लिये दिखाई दिया। किसान ने अपनी बतख़

उसे देकर बदले में उसका मुर्ग़ा ले लिया।

गाँव अब भी काफ़ी दूर था। सुखीराम भूख से बेहाल था। जब भूख असह्य हो गयी तो वह रास्ते में ही एक गृहस्थ के घर रुक गया। उसने उसे अपना मुर्ग़ा दिया और बदले में भरपेट भोजन कर लिया।

भोजन के बाद कुछ क्षण ठहरकर सुखीराम ने फिर अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में उसे अपना पड़ोसी मंगल दिखाई दिया। मंगल ने सुखीराम से पूछा, "सुना है, तुम हाट गये थे, क्या अच्छा सौदा कर आये?"

सुखीराम ने मंगल को सारा वृत्तान्त सुनाकर कहा, "क्यों भाई, जो कुछ मैंने किया, वह ठीक ही किया न? तुम्हारी क्या राय है?"

"तुमने भारी गलती की है। सब सुनकर तुम्हारी घर वाली आग बबूला हो जायेगी। सच मानो, वह तुम्हारे साथ खूब झगड़ेगी!" मंगल ने कहा।

"तुम मेरी घर वाली को नहीं जानते। वह झगड़ालू औरत नहीं है।" सुखीराम ने जवाब दिया।

"तुम्हारी घर वाली कैसी ही भोली-भाली औरत क्यों न हो, आज तुमने जो काम किया है, वह तुमसे ज़रूर नाराज़ हो जायेगी और झगड़ा करने पर उतारू हो जायेगी।" मंगल फिर बोला। दोनों ने शर्त लगायी।

सुखीराम बोला, "मेरे पास सौ रुपये हैं। मेरी पत्नी मेरी करनी पर नाराज़ होकर झगड़ा
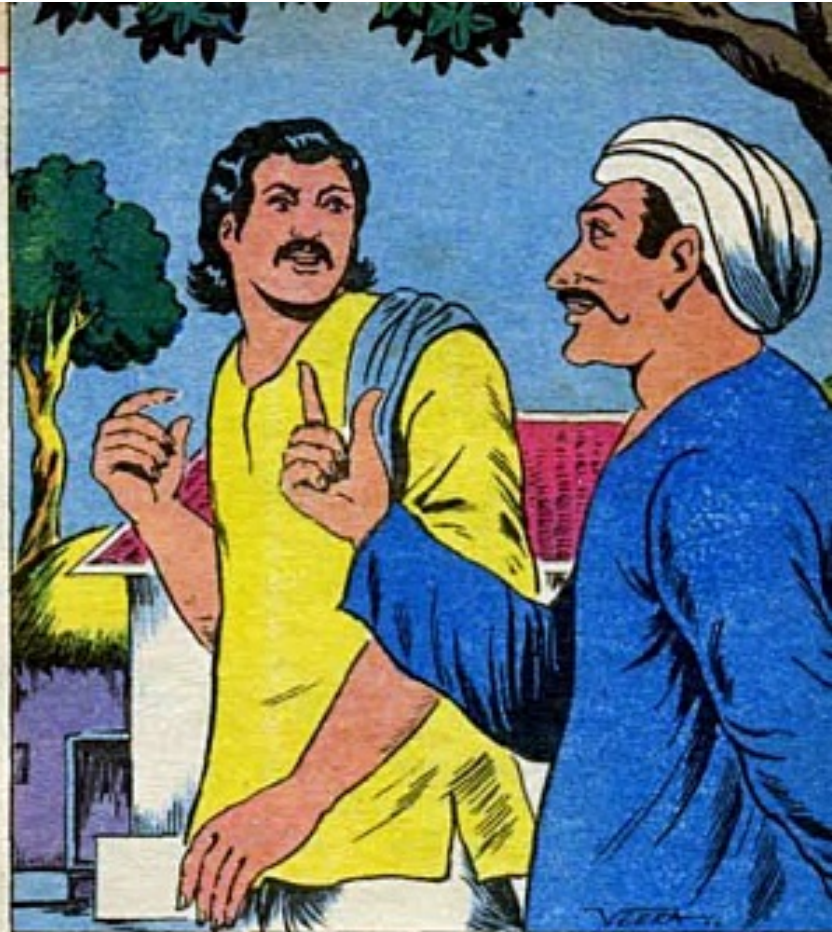
कभी नहीं करेगी, इस बात पर मैं सौ रुपये की शर्त लगाता हूँ। बोलो, तुम कितने रुपये की शर्त लगाते हो?"

"मैं इस बात पर सौ रुपये की शर्त लगाता हूँ कि आज के तुम्हारे व्यवहार पर तुम्हारी घरवाली निश्चय ही तुमसे झगड़ा करेगी।" मंगल ने बड़े विश्वास से कहा।

"तब तुम एक काम करो। मेरे पीछे-पीछे मेरे घर आओ और बाहर बैठकर हमारी बातचीत ध्यान से सुनो। फैसला हो जायेगा।" यह कहकर सुखीराम मंगल को अपने घर ले गया और उसे बाहर चबूतरे पर बैठा दिया।

सुखीराम को घर वापस आया देख कर सुशीला ने पूछा, "अच्छा, तुम आ गये? क्या गाय बिक गयी? कितने में बेच आये?"

"हमारी गाय को किसी ने नहीं ख़रीदा, इसलिए गाय देकर बदले में मैंने एक घोड़ा ले लिया ।" सुखीराम ने उत्तर दिया ।

"यह तो तुमने बड़ा अच्छा किया । अब हम एक गाड़ी खरीद लेंगे और आराम से कहीं भी आयें-जायेंगे ।" सुशीला बोली ।

"घोड़े को मैं घर नहीं लाया । मैंने रास्ते में उसे एक आदमी को देकर उसकी बकरी ले ली ।" सुखीराम बोला ।

"तुमने बड़ा अच्छा किया । घोड़े को पालने में बड़ा खर्च आता है । बकरी पालने में एक कौड़ी भी नहीं लगती । बकरी कहाँ है ?" सुशीला ने पूछा ।

"पहले मेरी बात सुन लो । मैंने बकरी देकर बतख़ ले ली थी ।" सुखीराम ने कहा ।

"वाह, तुमने बड़ा अच्छा किया । बकरी के पीछे बड़ा दौड़ना पड़ता है । पालने में तकलीफ़ ही उठानी पड़ती है ।" सुशीला बोली ।

"मैंने बतख़ के बदले मुर्ग़ा ले लिया था !" सुखीराम बोला ।

"ओह ! मैं भी यही कहना चाहती थी कि बतख़ न लेकर मुर्ग़ा ले लेते तो बड़ा अच्छा रहता । रोज़ सवेरे बाँग देकर जगा दिया करेगा ।" सुशीला की बोली से खुशी टपक रही थी ।

"सुनो ! बात यह हुई कि रास्ते में मुझे बड़ी भूख लगी । मैंने एक गृहस्थ को वह मुर्गा दिया और उसके घर पेट भर कर खाना खाया ।" सुखीराम ने कहा ।

"अच्छा किया ! कम्बख्त मुर्ग़ा क्या जान से भी बढ़कर होता है ?" सुशीला बोली ।

अब सुखीराम घर के बाहर आया और चबूतरे पर बैठे मंगल से बोला, "दोस्त ! तुमने हमारी बातचीत सुन ली है न ?"

"हाँ, हाँ सुन ली है, बहुत अच्छी तरह सुन ली है । तुम मेरे घर चलो और शर्त के सौ रुपये ले लो !" मंगल चबूतरे से उतरते हुए बोला ।

सुखीराम की पत्नी सुशीला पति के अनुकूल चलने वाली गृहिणी थी । उसके मृदु स्वभाव के कारण ही सुखीराम ने गाय की क़ीमत से भी अधिक रुपये कमा लिये ।

राजा अनरण्य अपनी पुत्री के विवाह को लेकर संशय में पड़ा हुआ था। वह समझ नहीं पा रहा था, क्या करे, क्या न करे ! तब उसके मंत्रियों ने उसको सलाह दी, "महाराज ! आपकी पुत्री पद्मावती अवश्य ही इन महामुनि पिप्पलाद को पति-रूप में पाना चाहेगी। ये उच्च वंश में पैदा हुए हैं। महान तपस्वी हैं। इनके साथ पुत्री का विवाह होना बड़े सौभाग्य की बात होगी। आप पद्मावती को इन्हें दिखा दीजिए ! यदि उसे स्वीकार हो तो इनके साथ विवाह कर दीजिए और यदि स्वीकार न हो तो ये महामुनि यहाँ से चले जायेंगे !"

मंत्रियों की इस सलाह से पिप्पलाद का मन कुछ शांत हुआ। उसने पद्मावती को बुला भेजा। राजकुमारी ने पिप्पलाद को देखा और उनकी पत्नी बनने के लिए उसने स्वीकृति दी। अनरण्य का संशय इस प्रकार दूर हो गया और उन्हों ने उन दोनों का विवाह कर अत्यन्त यश प्राप्त किया।

विवाह के पश्चात् मुनि पिप्पलाद पद्मावती को लेकर आश्रम में चले गये। राजा अनरण्य अपनी पुत्री को प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र का राजतिलक किया और अपनी पाँचों पत्नियों के साथ पिप्पलाद मुनि के आश्रम में पहुँचे। राजा अनरण्य ने वहीं अपना वानप्रस्थ जीवन बिताने का निश्चय किया।

एक दिन की बात है, पद्मावती नदी में स्नान करने जा रही थी, कि धर्मदेव ने एक सुन्दर युवक का रूप धारण किया और पद्मावती के

निकट जाकर बोले, "हे सुन्दरी ! तुम्हारा रूप अनुपम है। तुम उस वृद्ध और कुरूप पति के साथ अपने जीवन और यौवन को व्यर्थ मत करो। यह जीवन प्रकृति की अनुपम देन है ! मूर्ख लोग ही आवेश में आकर गलत निर्णय करके जिन्दगी भर अपनी करनी पर पछताते रहते हैं। इसलिए तुम फिर अपने निर्णय पर भली भांति सोच-विचार कर लो ! हो सकता है कि तुमने अपने माता-पिता के अनुरोध पर विवश हो कर यह निर्णय कर लिया हो ! माता-पिता केवल अपना स्वार्थ देखते हैं ! लेकिन तुमको स्वयं अपने भविष्य के बारे में सोच लेना चाहिए ! वे केवल अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहते थे ! लेकिन उनको खुश करने केलिए तुम्हें विवश होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरी बात मान ली। मैं तुम्हारे योग्य वर हूँ। तुम मेरे साथ चलो और मेरे राज्य की साम्राज्ञी बन कर जीवन बिताओ !"

पद्मावती ये बातें सुन कर क्रुद्ध हो उठी। उसने शाप दिया, "तुमने मेरे पतिदेव की निन्दा करके भयानक अपराधं किया है। तुम्हारा क्षय हो जाये।"

शाप सुनकर धर्मदेव घबरा गये, बोले, "हे साध्वी। मैं राजा नहीं, धर्मदेव हूँ। केवल तुम्हारे पातिव्रत्य की परीक्षा लेने यहाँ आया था। तुम मुझे क्षमा करो और अपना शाप वापस ले लो !"

पद्मावती को लगा कि उससे कुछ ज़्यादती हो गयी है। फिर भी वह बोली, "हे महात्मा ! मैं अपने शाप को किसी हालत में वापस नहीं ले सकती। आप हर युग में अपने चार धर्मों में से एक धर्म को खोकर सदा केलिए जीवित रहेंगे।"

पद्मावती की यह सारी कहानी सुनाकर वशिष्ठ ने मेनका और हिमवान से कहा, "आप भी राजा अनरण्य को अपना आदर्श मानकर अपनी पुत्री का विवाह शिव के साथ कर दीजिए!"

वशिष्ठ के उपदेश से मेनका और हिमवान सन्तुष्ट हुए। मैनाक आदि अन्य सम्बन्धी जन भी शिव-पार्वती के विवाह के लिए एकदम सहमत हो गये।

मेनका और हिमवान ने पार्वती का हाथ अरुन्धती और वशिष्ठ के हाथों में रखकर कहा,

"आपके आदेश से हम अपनी इस कन्या का विवाह शिव के साथ करने के लिए तैयार हो गये हैं। आप विवाह-लग्न निश्चित कर दीजिए!"

अरुन्धती ने पार्वती को जगन्माता बनने का आशीर्वाद दिया। अन्त में माघ शुक्ला एकादशी के दिन आरुद्रा नक्षत्र के वृश्चिक लग्न में, ब्रह्ममुहूर्त में शिव-पार्वती के विवाह का मुहूर्त निकाला गया।

इसके बाद वशिष्ठ सहित सब ऋषि शिव के पास लौट आये। सप्त ऋषियों ने शिव को विवाह-तिथि के निश्चय का समाचार दिया और यह सलाह दी कि विवाह की तैयारियों के लिए ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि को सारा कार्यभार सौंपा जाये।

इधर पार्वती के विवाह की तैयारियाँ भी बड़े जोर-शोर से हो रही थीं। आवश्यक सामग्री एकत्रित की गयी। बन्धु-बान्धवों के नाम शुभ निमंत्रण-पत्र भेजे गये। हिमवान ने अपने मंत्रियों के द्वारा विवाह के प्रबन्ध का सारा कार्य सम्पन्न किया।

पार्वती को नववधू के रूप में अलंकृत करने के लिए नगर की सारी सौभाग्यवती सुमंगल नारियाँ हिमवान के राजप्रासाद में आ पहुँचीं। शुभ काल में पार्वती को मंगल-स्नान कराया गया। धूपार्जित रेशमी वस्त्र पहनाये गये। सुगन्धित द्रव्यों का लेपन कर पार्वती के माथे पर कस्तूरी का तिलक लगाया गया। आभूषणों से अलंकृत कर कंठ में पुष्पहार पहना कर उसे नववधू बनाया गया।
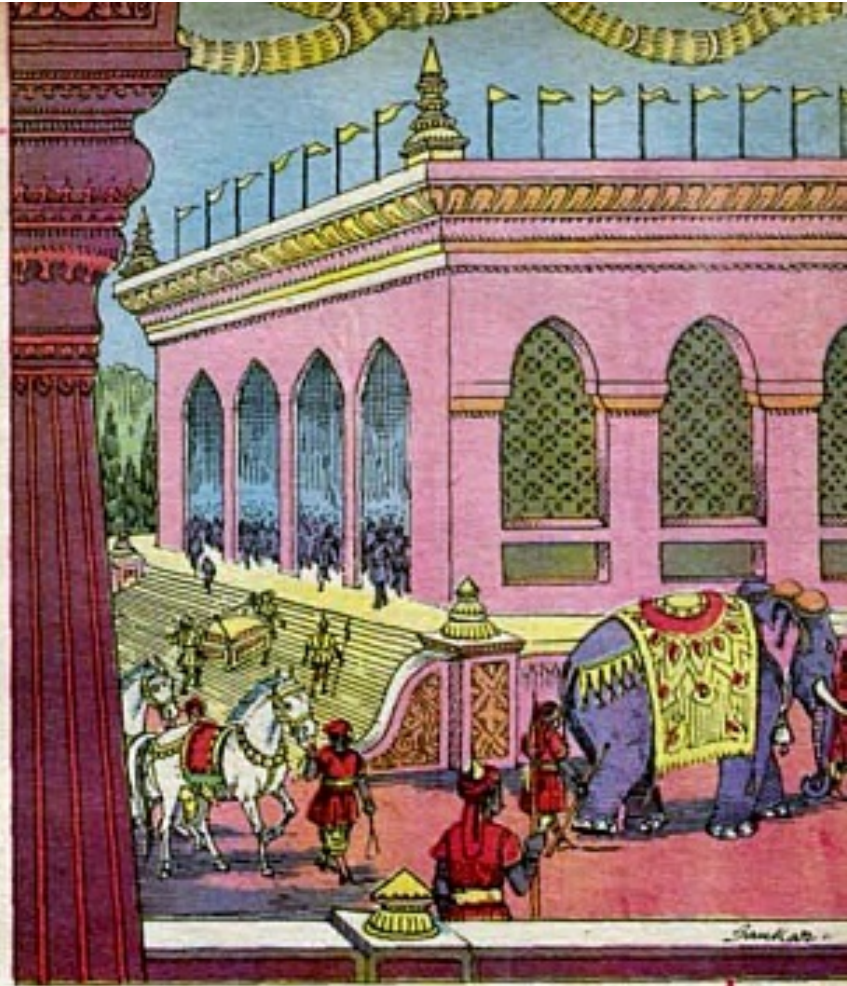
हिमवान के द्वारा भेजा गया पार्वती के विवाह का शुभ निमंत्रण-पत्र पाकर उनके बन्धु-बान्धव, सम्बन्धी सपरिवार विवाह में भाग लेने केलिए आने लगे। वे अपने साथ स्वर्ण कमल, मुक्ता-माणिक, मूंगे के अनेक उपहार लाये।

अन्य पर्वतों के राजा नवरत्न, चन्दन इत्यादि सुगंधित द्रव्य, मत्त हाथी, सैन्धव अश्व आदि उपहार लाये।

हिमवान ने उन उपहारों को स्वीकार किया और सभी अभ्यागतों का समुचित आदर-सत्कार कर उनके आवास का प्रबन्ध किया।

अभ्यागतों के आवास की व्यवस्था और

पार्वती के विवाह केलिए दस हज़ार योजन लंबे विवाह-मंडप के निर्माण के लिए हिमवान ने विश्वकर्मा की सहायता ली। हिमवान की राजधानी ओषधिपुर को अद्भुत ढंग से सुसज्जित किया गया।

कैलास में शिव भी हिमवान का निमंत्रण-पत्र पाकर प्रसन्न हो उठे और वायुदेव द्वारा संदेशा भेज कर शिवजी ने नारद को बुला भेजा।

नारद ने शिव का दर्शन कर बुलाने का कारण पूछा।

शिव ने प्रसन्नचित्त से कहा, "देवर्षि! हिमवान की पुत्री पार्वती से मेरा विवाह संपन्न होनेवाला है। विवाह के लिए अभी पाँच दिन शेष हैं। समय कम है। आप विलम्ब किये बिना तीनों लोकों के निवासियों को निमंत्रण दे आइये। कुबेर आदि को सूचित कीजिये कि वे लोग विवाह के लिए आवश्यक सारी सामग्री अपने साथ ले आवें। ये सारे कार्य आप संपन्न करें।"

नारद ने शिव के वचन सहर्ष स्वीकार किये और उनसे विदा लेकर सर्वप्रथम ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि देवताओं को निमंत्रण दिया। फिर भूलोक तथा नागलोक के वासियों को सूचित किया, "माघ शुक्ला एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में शिव-पार्वती का विवाह संपन्न होगा। आप सब इस शुभ विवाह में अवश्य पधारें।"

इसके बाद नारद ने कुबेर को सूचित किया कि विवाह की सारी आवश्यक सामग्री के साथ वे कैलास में यथा शीघ्र पहुँचा जावे, तब वे भी कैलास में पहुँचे।

शिव का निमंत्रण पाकर विवाह-पर्व में सम्मिलित होने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र आदि देवता और ऋषिगण कैलास में आने लगे। नन्दीश्वर तथा रुद्रगणों ने अभ्यागतों का स्वागत किया और उनके आवास की उत्तम व्यवस्था की।

इस विवाह में ब्रह्मा पुरोहित बनेंगे, विष्णु वधू के भाई होंगे तथा इंद्र आदि देवता अन्य सदस्यों का स्थान ग्रहण करेंगे, यह निश्चय किया गया।

शिव का मंगलाभिषेक करने के लिए

बृहस्पति ने मुहूर्त निकाला ।

गरुड़, गन्धर्व यक्षनारियाँ, सप्त माताएं, लक्ष्मी, सरस्वती, शची तथा अरुन्धती आदि महान पतिव्रताओं ने शिव का मंगल-स्नान संपन्न कराकर उन्हें हरिचन्दन का लेप लगाया । कण्ठहार पहनाकर वर के रूप में उन्हें अलंकृत किया ।

गौतम, अत्रि, भृगु आदि ऋषियों ने शिव के दायें हाथ में शास्त्र-विधि से दीक्षा-बन्ध बांधा और नवग्रहों की पूजा संपन्न की ।

पुरोहित ब्रह्मा के आदेश पर शिव अपने पक्ष के लोगों के साथ मंगल तूर्यनादों के बीच ओषधिपुर के लिए चल पड़े ।

नन्दीश्वर ने कैलास की रक्षा के लिए रुद्रगणों के अधिपतियों को नियुक्त किया और प्रथम गणों के साथ यात्रा आरंभ की ।

नन्दीश्वर के साथ वीरभद्र, चण्डीश्वर, भैरव आदि अपने-अपने वाहनों पर चल पड़े ।

वर बने शिव को ऐरावत पर आसीन कराया गया । सरस्वती तथा ब्रह्मा हंस-वाहन पर बैठे, लक्ष्मी तथा विष्णु गरुड़ पर, शची एवं इंद्र अपने स्वयंचालित सिंहासन पर विराजमान हुए ।

कुबेर नव-निधियों के साथ ऐरावत के पीछे चल रहे नन्दी पर बैठ गये । देवियाँ, ऋषि-पत्नियां एवं अप्सराएँ दिव्य वस्त्रों तथा सुगन्धित द्रव्यों के थाल ले कर विमानों पर चल पड़ीं ।

जब सारे बराती नगर के निकट पहुँचे तो

हिमवान ने अपने पुरोहित गर्गमुनि के साथ, मेनका तथा पुत्रों के साथ मंगलवाद्यों के बीच उनकी अगवानी की ।

ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र तथा सभी ऋषियों को हिमवान ने प्रणाम किया और शिव के सामने हाथ जोड़कर बोले, "आप सर्वेश्वर हैं । आपके कारण मैं भी महान कहलाने लगा हूँ । आप वर बनकर मेरे घर पधारे हैं । आपके साथ मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगा । मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप पार्वती का पाणिग्रहण कर मुझे तथा मेरे वंश को पवित्र बनाइये !"

इसके बाद हिमवान ने शिव को वस्त्र, गंध, पुष्प और ताम्बूल अर्पित किया । दूध और शर्बत से सबका स्वागत किया और उनकी

थकान मिटाने के लिए चँवर डुलाने का प्रबन्ध किया ।

वधू-पक्ष की सभी स्त्रियों ने परस्पर कहा, "हमारी पार्वती बड़ी भाग्य शालिनी है । करोड़ मन्मथों से भी सुन्दर पति उसे प्राप्त हुआ है ।"

तब मेनका ने शिव के सामने हाथ जोड़कर कहा, "सदाशिव ! मैंने दूसरों की चुगली सुनने के कारण आपकी निन्दा की । मेरा अपराध क्षमा कर दीजिए । आप मेरे घर पधारें । हमारी वर-पूजा स्वीकार करें और पार्वती के साथ विवाह संपन्न करें ।"

इसके बाद नगर की बड़ी आदरणीया स्त्रियों ने शिव के प्रति आशीर्वचन कहे ।

रास्ते भर पुष्प, मोती और अक्षत बिखेरते हुए मेनका और हिमवान शिव को अतिथि-कक्ष में ले गये ।

वर-पूजा की गयी और वरपक्ष के सभी अभ्यागतों के आवास की उत्तम व्यवस्था कर वे अपने भवन में लौटे ।

पार्वती ने अंबिका के मन्दिर में देवी-पूजन कर कुल की रीति का निर्वाह किया । जब पार्वती अपनी सखियों के साथ मन्दिर में जाने लगी, तब देवताओं ने उसे देखा और मन ही मन कहा, "यह तो स्वयं साक्षात् परादेवी हैं । शिव के साथ इनका विवाह संपन्न होने पर हमारे सारे कष्ट दूर हो जायेंगे । हम लोग धन्य हो जायेंगे ।"

पार्वती देवी-पूजन कर लौट आयी । विवाह-मुहूर्त निकट आ गया था । शिव को ऐरावत पर ही विवाह-मंडप तक लाया गया और उन्हें उतारकर विवाह-वेदी पर आसीन कराया गया ।

मेनका और हिमवान ने जामाता के चरण प्रक्षालन कर उस जल को अपने माथे से लगाया और पार्वती का हाथ शिव के हाथ में रखकर कन्यादान किया ।

शिव-पार्वती का विवाह विभवपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ । देव, ऋषि शिव से विदा लेकर अपने निवास-स्थानों को चले गये ।

शिव अपने श्वशुर-गृह में कुछ दिन रहे । फिर उनके मन में कैलास जाने की इच्छा हुई । उन्होंने नन्दीश्वर के द्वारा मेनका और हिमवान से

अपनी इच्छा प्रकट की ।

मेनका और हिमवान ने पार्वती की विदा की तैयारियाँ आरंभ की । उन्होंने पार्वती को सुन्दर वस्त्र, अलंकार, गृह-उपकरण, उसका वाहन सिंह तथा परिचारिकाएं प्रदान कीं और शिव से निवेदन किया कि वे पार्वती के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करें । बड़ी सम्मान्या बूढ़ियों ने पार्वती को उपदेश दिया ।

शुभ मुहूर्त में शिव ने पार्वती को साथ लेकर कैलास के लिए प्रस्थान किया । कैलास पहुँच कर शिव ने पार्वती के साथ गृह-प्रवेश किया । तीन दिन तक प्रीति भोज चलता रहा । इसके बाद ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य देवों ने शिव से विदा माँगी ।

शिव ने सब देव, ऋषियों, यक्ष, गन्धर्व, अप्सराओं को यथा योग्य उपहार दिये और आदर पूर्वक उन्हें विदा किया ।

विवाह में आये सब अभ्यागतों के चले जाने पर शिव ने नन्दीश्वर से कहा, "अब मैं पार्वती के साथ विश्राम करूँगा । तुम महासौध को अलंकृत करवा दो । अन्य गणों की सहायता ले लो ।"

नन्दीश्वर ने गणाधिपतियों को साथ लेकर महासौध का गुलाब-जल से प्रक्षालन किया । जवा आदि सुगन्धित द्रव्य-पदार्थों एवं मुक्ता-चूर्ण से कमलाकार अल्पनाएँ रचीं । मूंगों से बने पर्यं क पर हंसतूलिका तल्प बिछाया गया । दीवारों को चित्रित किया गया । पेय पदार्थ एवं खाद्य व्यंजन उचित स्थानों पर रखे गये । इस तरह शयन कक्ष को पूर्ण रूप से सु सज्जित किया गया ।

महासौध की सजावट पूरी हुई, यह सुनकर शिव ने नन्दीश्वर आदि प्रमुख गणों से कहा, "अब हम शयन करेंगे । तुम लोग किसी को अन्दर न आने देना । महासौध के चारों तरफ़ प्रहरी नियुक्त कर दो !"

शिव ने पार्वती का हाथ पकड़ा और अपने साथ उनको शयन के लिए भीतर चले गये । इसप्रकार नव-दम्पति का सुख-भोगों से भरा जीवन प्रारम्भ हुआ ।

जनता का प्रतिनिधि

नागवर एक सम्पन्न ग्राम था। इस ग्राम के निवासी वामनमूर्ति का स्वभाव सबको भड़काने का था। वह किसी भी छोटी सी बात को लेकर ग्रामवासियों को उसकस देता और झगड़ा होने पर दख़ल देकर कहता, "इस झगड़े का फैसला यहाँ नहीं होगा, तुम लोग अदालत में जाओ, मैं जो हूँ न !"

एक बार ग्रामवासियों के सामने यह समस्या पैदा होगयी कि राजधानी में जनता का प्रतिनिधि बनाकर किसे भेजा जाये ? गाँव वालों में प्रतिनिधि के चुनाव को लेकर मतभेद हो गया। अंत में सबने मिलकर यह काम गाँव के मुखिया रामदीन को सौंप दिया।

रामदीन छद्मवेश बनाकर रात के समय सारा गाँव घूमता। पाँच दिन बाद उसने ग्रामवासियों को यह सलाह दी कि नागवर के प्रतिनिधि के रूप में वामनमूर्ति का चुनाव किया जाये।

"झगड़ा पैदा करनेवाला यह वामनमूर्ति क्या हमारा प्रतिनिधि होगा ?" मुखिया के सुझाव पर ग्रामवासियों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

मुखिया ने उनका समाधान करते हुए कहा, "मेरे मन में पहले से ही यह शंका थी कि इस गाँव के सारे झगड़े-फसादों की जड़ वामनमूर्ति है। पाँच दिन रात में सारा गाँव घूमने के बाद मेरी यह शंका सच्ची साबित हो गयी। वामनमूर्ति अगर राजधानी चला जायेगा तो गाँव में शांति पैदा हो जायेगी। क्योंकि जनता के प्रतिनिधि के रूप में उसे अपना निवास राजधानी में ही बनाना होगा।"

ग्रामवासियों को बात समझ में आगयी। उन्होंने एकमत से वामनमूर्ति को अपना प्रतिनिधि चुना और उसे राजधानी में भेज दिया।

सुलतान और गरुड़

ईराक देश में केरवान एक राज्य है । एक युवक वहाँ का सुलतान बन गया । वह अपनी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा स्वयं किया करता था ।

सुलतान अकसर कहता, "मैं जो भी काम करता हूँ, सोच-समझकर करता हूँ ।"

केरवान की प्रजा ही नहीं, राज्य के मुख्य लोग और सुलतान के परिवार के लोग भी उसकी प्रसन्नता पाने के लिए उसकी झूठी तारीफ़ करते और कहते, "अहा ! आपकी अक्लमंदी अद्भुत है !"

लेकिन सुलतान का वृद्ध वज़ीर जब भी मौक़ा मिलता, सुलतान को समझाता और कहता, "हुज़ूर ! जल्दबाजी में कोई काम नहीं करना चाहिए । हर काम सोच-समझकर विवेकपूर्वक करना चाहिए ।"

नवयुवक सुलतान को समझ में न आता कि बूढ़ा वज़ीर क्यों उसे यह सलाह देता है !...

सुलतान के पास एक गरुड़ था । वह उसे अत्यन्त प्यार से पाला करता था । गरुड़ अत्यन्त समझवाला पक्षी था और सदा सुलतान के साथ ही रहता था । जब सुलतान शिकार खेलने जाता, वह आसमान में परिक्रमा करता हुआ उड़ता और जिस तरफ पशुओं की बहुलता होती या आखेट के लायक़ हिरन आदि होते, वह सुलतान को सूचना देता । ख़तरा होने पर वह उसकी चेतावनी भी देता ।

एक बार सुलतान अपने परिवार के कुछ ख़ास लोगों को लेकर शिकार खेलने गया । वहाँ उसे एक सुन्दर हिरन दिखाई पड़ा । सब उत्साहित हो उठे और उसे चारों तरफ़ से घेर लिया ।

सुलतान ने अपने साथियों को सूचना दी, "हमें हिरन को ज़रूर पकड़ना होगा । अगर वह किसी तरफ़ से बचकर भाग गया तो उसकी जान की ख़ैर नहीं ।"

'अरब की रातों' से एक कहानी

हिरन अगले पैरों पर झुककर थोड़ी देर स्थिर दृष्टि से देखता रहा। फिर अचानक उछला और सुलतान के सिर पर से कूदकर जंगल में भाग गया।

हिरन को इस तरह हाथ से निकलता देख सुलतान क्रुद्ध हो उठा और बोला, "मैं इस हिरन को जिन्दा नहीं छोड़ूँगा।" और अपने घोड़े को एड़ लगाकर वह भागते हुए हिरन का पीछा करने लगा।

जंगल का इलाका। हिरन तो पेड़ों और झाड़ियों के बीच से बड़ी सरलता से अपना रास्ता निकाल लेता, लेकिन घोड़े के लिए यह काम इतना सरल नहीं था। हिरन और घोड़े के बीच का फासला बढ़ता चला गया। गरुड़ हिरन का अनुसरण करता हुआ आसमान में उड़ने लगा।

सुलतान गरुड़ की मदद से अब भी हिरन का पीछा कर रहा था। वे बहुत दूर जंगल की सीमा पर चले आये थे। पेड़ पीछे छूट गये थे। इधर-उधर कुछ पौधे मात्र थे इसलिए हिरन अब साफ़ नजर आ रहा था। सुलतान ने निशाना साधा और हिरन पर बाण छोड़ दिया। निशाना ठीक जगह पर लगा। हिरन छटपटाया और ज़मीन पर गिर पड़ा।

हिरन के शिकार की खुशी में सुलतान अपनी थकावट मिटाने के लिए पास की एक चट्टान पर बैठ गया। चट्टान से लगा हुआ ही एक टीला था। उस पर गरुड़ बैठ गया।

सुलतान थक कर शिथिल हो चुका था। उसे बड़ी प्यास लग रही थी। पानी के लिए उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। पास में ही एक बड़े-बड़े पत्तोंवाली झाड़ी थी। सुलतान ने देखा, दोने की तरह उसके पत्ते पर थोड़ा-सा पानी है। टीले की एक झाड़ी में से पानी की बूँदें पत्ते पर गिर रही थीं। 'इस पानी से प्यास तो नहीं बुझ सकती, लेकिन गला तो तर हो सकता है'— यह सोचकर सुलतान ने बड़ी सावधानी से उस पत्ते को तोड़ लिया और धीरे से मुँह के पास ले गया।

दूसरे ही क्षण गरुड़ तेज़ी से उड़कर आया और सुलतान के हाथ के पत्ते को अपना पंजा मार कर गिरा दिया और फिर उड़कर उस टीले

पर जा बैठा ।

"छिः ! क्या इस तरह अपनी प्यास बुझायी जाती है ?" सुलतान ने समझा कि गरुड़ ने पानी पीने के लिए ऐसा किया । उसने फिर एक पत्ता लिया और ऊपर से गिरने वाली पानी की बूँदों को सावधानी से पत्ते में भर लिया । इस बार भी गरुड़ तेज़ी से आया और पंजा मार कर सुलतान के हाथ का पत्ता गिरा दिया ।

सुलतान का क्रोध असहनीय हो उठा । उसने गरुड़ को पास आने का संकेत किया । ज्यों ही वह समीप आया, उसने तलवार से उसका सिर काट डाला ।

लेकिन, दूसरे ही क्षण सुलतान को विचार आया कि इस बात का पता लगाया जाये कि पानी की ये बूदें कहाँ से गिर रही हैं । वह जिज्ञासावश टीले पर चढ़ गया । टीले पर झाड़ी के अन्दर लेटे साँप के मुँह से ज़हर ही बूंद-बूंद बन कर नीचे गिर रहा था । गरुड़ ने उसकी प्राण-रक्षा करने के लिए ही उसे यह पानी नहीं पीने दिया था ।

सच्ची बात जानकर सुलतान दुख से भर गया । उसने टीले पर से देखा, थोड़ी ही दूर एक झरना बह रहा था, लेकिन सुलतान को अपनी प्यास बुझाने का भी भान नहीं रहा । वह तुरन्त टीले पर से उतर आया । मृत गरुड़ को उठाकर अपनी गोद में रख लिया और प्यार से उसके पंख सहलाने लगा । धीरे-धीरे वह अपनी चेतना खो बैठा ।

इस घटना के कुछ देर बाद सुलतान के सेवक भी वहाँ आ पहुँचे । उन्होंने सब बात समझ ली । सुलतान के मुँह पर पानी छिड़क कर वे उन्हें होश में लाये और पानी पिलाया । सबने सुलतान को तसल्ली दी कि जो होना था, हो चुका, उसके बारे में चिन्ता करने से अब कोई फ़ायदा नहीं । पर सुलतान का मन दुख और पश्चाताप से भरा हुआ था ।

अनुभव से ही सुलतान यह बात जान पाया कि वृद्ध वज़ीर उसे क्यों बार-बार सावधान करता था कि कोई भी काम सोच-समझ कर ही करना चाहिए, जल्दबाजी में नहीं ।

अफ्रीका के हाथी

२१८ ई० पू० उत्तर अफ्रीका के हानिबाल नाम के एक सेनापति ने रोमन लोगों पर हमला किया। उस युद्ध में हानिबाल की ओर से हाथियों ने भी युद्ध में भाग लिया। उस समय आल्प्स से इटली जानेवाले मार्ग के बीच कुछ हाथी मर गये। उस युद्ध में जिन हाथियों ने हिस्सा लिया था, उनमें से अधिकांश हाथी अफ्रीका के थे। बाक़ी भारत के थे।

हमें यह प्रमाण उपलब्ध होता है कि किसी ज़माने में संसार के अनेक देशों में हाथी हुआ करते थे। लेकिन अब अफ्रीका तथा भारत से सम्बन्धित दो किस्म के हाथी ही पाये जाते हैं।

इन दो किस्म के हाथियों में अफ्रीका के हाथी आकार में बहुत बड़े हैं। इनके कान इतने लम्बे-चौड़े हैं कि ज़रूरत पड़ने पर अच्छे बड़े पंखे का काम देते हैं और सुनने की अपेक्षा शरीर को शीतल रखने में अधिक उपयोगी साबित होते हैं।

भारत के हाथी छायादार घने जंगलों में निवास करना पसन्द करते हैं। इन्हें अफ्रीका के हाथियों की भाँति उतने बड़े कानों की ज़रूरत नहीं होती।

अफ्रीका के हाथियों के कुंभस्थल भारत के हाथियों के कुंभस्थलों की तुलना में थोड़े अधिक काले होते हैं। सूंड पर तहें ज्यादा होती हैं और अंत में दो होंठ होते हैं। इनके दाँत ज्यादा लम्बे होते हैं।

हथिनी और उसके बच्चे एक साथ रहकर पारिवारिक जीवन बिताते हैं। ये कुछ परिवार मिलकर एक दल या झुंड का रूप धारण कर लेते हैं। जब जरूरत पड़ती है तो नर हाथी भी इन दलों के साथ मिल जाते हैं पर प्रायः वे इन दलों से अलग ही रहते हैं।

हथिनी जब बच्चा देती है तो एक और हथिनी उसकी मदद के लिए खड़ी हो जाती है।

अफ्रीका के हाथी पचास वर्ष तथा भारत के हाथी लगभग सत्तर वर्ष से अधिक जीवित रहते हैं

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर १९८५ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

G. Prabhakar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जुलाई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

मई के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : जीत का सवाल !

द्वितीय फोटो : नृत्य का कमाल !!

प्रेषक : रमेश कुमार श्रीवास्तव, बताशेवाली गली. छत्री बाजार, लश्कर, ग्वालियर-४७४००१

'क्या आप जानते हैं ?' के उत्तर

१. इकहत्तर प्रतिशत २. बुधग्रह ३. प्लूटो ४. गुरुग्रह ५. लगभग ७,८०० मील ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

मुड़-मुड़ के देखे संसार
सुपर रिन की चमकार!
सुपर
रिन
सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद
किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CHANDAMAMA

माल्टोवा टोली ने फुर्ती दिखायी, जान बचायी...

उस दिन बेहद गर्मी थी। पूरी टोली डब्बू के घर जमा हुई थी और ठंडे-ठंडे पानी में तैरने जाने की तैयारी ज़ोर-शोर से चल रही थी। "देखो, माल्टोवा के फ्लास्क और सैंडविच ले जाना मत भूलना" डब्बू की मां ने याद दिलाई। माल्टोवा टोली चल पड़ी—हंसती, गुनगुनाती, चमचमाती साइकिलों पर घंटियां टनटनाती।

टायर फट गया

एकाएक भारी धमाका हुआ। ये लो, बेचारे डब्बू की साइकिल का तो टायर ही फट गया। सभी डब्बू के पास आकर रुक गये। तभी एक काली कार हवा से बातें करती, सनसनाती आती दिखाई दी और सड़क पर जा रहे एक साइकिल सवार से टकरा गयी। पहले तो कार की रफ्तार कुछ कम हुई फिर ये जा... वो जा... भाग खड़ी हुई!

माल्टोवा टोली ने फुर्ती दिखाई

बेनू ने भागती कार का नंबर देख लिया। "मैं ज़रा साइकिल सवार को देख लूं" डब्बू चल पड़ा। मालती एम्बुलेंस बुलाने के लिए दौड़ी। और नन्ही मिनी ने तो कमाल ही कर दिया, ऐन वक्त पर फटाफट ५० पैसे का सिक्का निकाल कर सामने रख दिया।

बेचारे लड़के को बहुत चोट लगी थी। "घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा," डब्बू ने ढाँढस बँधाया। "सलीम, सुनो।" उसने आवाज़ दी और दोनों ने मिलकर कामचलाऊ टॉर्नीकेट बांध दिया। जब खून बहना बंद हुआ तब उनकी जान में जान आई।

एम्बुलेंस आ गयी

इतने में ही सफेद एम्बुलेंस आ पहुँची। डॉक्टर ने स्थिति सम्हाली। "शाबाश बच्चों!" बाद में डॉक्टर ने कहा, "तुम लोगों की फुर्ती ने इस बच्चे की जान बचा ली। मुझे पूरा यकीन है कि पुलिस अपराधी को ज़रूर पकड़ लेगी।" "डॉक्टर साहब ये अकेला मेरा काम नहीं, था," डब्बू बोला, "माल्टोवा टोली ज़िंदाबाद।"

माल्टोवा का असर
सबसे अलग, सबसे बढ़कर

सचमुच माल्टोवा वाले बच्चे ज़िन्दगी का पूरा आनंद उठाते हैं क्योंकि माल्टोवा में है उत्तम गेहूँ, जौ, दूध, कोकोआ और चीनी की सम्मिलित पौष्टिकता जो उन्हें देती है बेहतर प्रतिरोध क्षमता, अधिक शक्ति और अधिकतम सामर्थ्य। माल्टोवा आपके बच्चों के जीवन में अपार उत्साह भरता है।

माल्टोवा क्लब का सदस्य बनिये।
बहुत आसान है।

बस ५०० ग्राम वाले जार के तीन लेबल और भीतरी सील या ५०० ग्राम वाले रीफिल पैक के तीन टॉप फ्लैप निम्नांकित पते पर भेज दीजिए :

दि माल्टोवा क्लब
४ थी मंज़िल, भण्डारी हाउस,
९१, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली ११००१९
और समझिए शामिल हो गए!

माल्टोवा क्लब का सदस्य बनिए

Thath
Tel.
hanand

Maltova

Maltova

JIL जगतजीत इंडस्ट्रीज लिमिटेड

विटामिन से भरपूर माल्टोवा: स्वास्थ्य, शक्ति और स्फूर्ति के लिए

SIMOES/JIL/003/85 HIN